सिसदेवरी उत्खनन

संचालनालय, संस्कृति एवं पुरातत्व
रायपुर, छत्तीसगढ़

यह पुस्तक सिसदेवरी उत्खनन से प्रकाशित संरचना एवं पुरावशेषों के अध्ययन और विश्लेषण पर केन्द्रित है। सिसदेवरी नष्ट प्राय विस्मृत पुरातत्वीय स्थल रहा है जहाँ उत्खनन से अवशिष्ट संरचना तथा महत्वपूर्ण कलाकृतियां प्रकाश में आयी हैं। सिसदेवरी की शिल्पकला में देवरानी –जेठानी मंदिर ताला की कला परंपरा का प्रभाव परिलक्षित है। ताला की कला परंपरा के सदृश्य कलाकृतियों की मौलिकता इस स्थल की विशेषता है। यहां से प्राप्त प्रतिमाओं में सहज सौंदर्य एवं मौलिक कल्पना प्रदर्शित है। संतुलित भाव–भंगिमा के साथ साथ अलंकरणात्क प्रतीक भी दर्शनीय हैं।

यह पुस्तक दक्षिण कोसल की स्थापत्य एवं शिल्पकला के कालक्रमानुसार विकास के अध्ययन के लिए शोधार्थियों को प्रेरित करेगी। सिसदेवरी से प्राप्त पुरावशेष महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय रायपुर में संग्रहित है। सिसदेवरी उत्खनन से संबंधित यह पुस्तक दक्षिण कोसल की प्रतिमा शास्त्रीय मौलिकता को रेखांकित करती है।

सिसदेवरी उत्खनन

जी.एल.रायकवार
एम.ए., प्रा.भा.इति.संस्कृति एवं पुरातत्व
एम.ए.इतिहास

संचालनालय, संस्कृति एवं पुरातत्व, छत्तीसगढ़
2013

सिसदेवरी उत्खनन

जी.एल. रायकवार
निदेशक
राहुल कुमार सिंह
सह निदेशक
सिसदेवरी उत्खनन
संचालनालय संस्कृति एवं पुरातत्व, छत्तीसगढ़

2013

सिसदेवरी उत्खनन

Excavation of Sisdeori

By G.L. Raikwar

संचालनालय, संस्कृति एवं पुरातत्व,
छत्तीसगढ़, रायपुर
प्रथम संस्करण 2013 ईस्वी.
1934 शक

मुख पृष्ठ : पुरुष प्रतिमा का ऊर्ध्व भाग, सिसदेवरी, काल 6–7वीं शती ई.
वाह्य पृष्ठ : भारवाहक गण, सिसदेवरी, काल 6–7वीं शती ई.

प्रकाशक
संचालनालय, संस्कृति एवं पुरातत्व, छत्तीसगढ़
मुद्रक :– छत्तीसगढ़ संवाद, रायपुर

प्रकाशकीय

भारतीय कला इतिहास के स्वर्णिम काल खंड की रचना में दक्षिण कोसल की कला परंपरा का अपना योगदान है। रामगढ़ स्थित सीतावेंगरा एवं जोगीमारा की गुफाएं, मल्हार से ज्ञात अभिलिखित चतुर्भुजी विष्णु प्रतिमा, देवरानी जेठानी मंदिर ताला का स्थापत्य, वैशिष्टय, ईंटों से निर्मित सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर आदि ऐतिहासिक धरोहर दक्षिण कोसल की कला परंपरा का प्रतिनिधित्व करते है। दक्षिण कोसल की राजनैतिक इतिहास की अपेक्षा सांस्कृतिक इतिहास अधिक रोचक, आकर्षक तथा समृद्ध रहा है। इसके सांस्कृतिक इतिहास के निर्माण में शरभपुरीय, नल, पांडु अथवा सोम, कलचुरि, फणिनाग तथा छिंदक नाग वंश के शासकों के काल में पल्लवित कला शैलियों का कालक्रमानुसार योगदान है।

दक्षिण कोसल के सांस्कृतिक स्वरूप को विकसित तथा पल्लवित करने में इस अंचल में प्रवाहित महानदी एवं उसकी सहायक नदियों की भी भूमिका है। राजिम, आरंग, सिरपुर, नारायणपुर, खरौद-शिवरीनारायण आदि कला केन्द्र महानदी के तट पर स्थित हैं। महानदी के तट पर स्थित सिरपुर सोमवंशी शासकों के काल में दक्षिण कोसल की वैभव सम्पन्न राजधानी रही है। महानदी के अतिरिक्त इस भू-भाग में शिवनाथ, कन्हर तथा रेंड नदी के तट पर लगभग छठवीं सदी ईसवी से लेकर दसवीं सदी ईसवी के मध्य कला संस्कृति के केन्द्र के रूप में ताला, डीपाडीह, महेशपुर आदि स्थल स्थापित हुए। दक्षिण कोसल के प्रारंभिक राजवंशों में नल वंश के शासक भी अत्यन्त पराक्रमी थे। इन्होने शरभपुरीय शासकों के सदृश्य अपनी स्वर्ण मुद्रायें प्रचलित किये। गढ़धनोरा में इसी राज वंश के शासकों के काल में अनेक शैव तथा वैष्णव मंदिर निर्मित हुए। शरभपुरीय शासकों के समय स्थापित राजधानी प्रसन्नपुर अद्यतन अज्ञात है तथापि सोम वंश के राजाओं के काल में श्रीपुर (सिरपुर) दक्षिण कोसल की वैभवशाली राजधानी रही है।

त्रिपुरी के कलचुरियों के राज्य विस्तार एवं अधिकार के पूर्व तक सोमवंशी शासक दक्षिण कोसल के सार्वभौम शासक रहे। ईंटों से निर्मित मंदिरों के भग्नावशेष एवं प्रतिमा शिल्प के आधार पर सरगुजा अंचल में भी सोमवंशी शासकों के आधिपत्य की पुष्टि होती है। सोमवंशी शासकों के काल में शैव, वैष्णव, बौद्ध तथा जैन धर्म से संबंधित विविध स्मारक भी निर्मित हुए।

दक्षिण कोसल की स्थापत्य कला के प्रारंभिक उदाहरण सीतावेंगरा एवं जोगीमारा (शैलोत्कीर्ण गुहा स्थापत्य) मौर्य काल की देन हैं। मंदिर स्थापत्य के रूप में दक्षिण कोसल में ज्ञात उदाहरण देवरानी जेठानी मंदिर लगभग 5वीं-6वीं सदी ईसवी में निर्मित स्मारक अवशेष है जो

अपने विलक्षण स्थापत्य एवं दुर्लभ प्रतिमाओं के लिए विख्यात है। ताला के स्थापत्य एवं प्रतिमा शास्त्रीय परंपरा देवरानी-जेठानी मंदिर के पश्चात विलुप्त हो जाती है। दक्षिण कोसल के कला इतिहास का यह एक आश्चर्य जनक पक्ष है। सिसदेवरी के उत्खनन से यद्यपि इसका समाधान नहीं होता है तथापि अंतिम उदाहरण के रूप में संकेत प्राप्त होता है।

छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के पश्चात जनजातीय क्षेत्रों की सांस्कृतिक संपदा को प्रकाश में लाने और ग्रामीण अंचलों में उपेक्षित पुरास्थलों को संरक्षण प्रदान करने के साथ साथ ऐतिहासिक धरोहरों के प्रति जन जागरूकता विकसित करने के लिए उत्खनन पर ध्यान केन्द्रित किया गया। इसी क्रम में सिसदेवरी में ज्ञात अत्याधिक क्षतिग्रस्त टीलानुमा संरचना पर वर्ष 2002-2003 में उत्खनन कार्य संपन्न करवाया गया था जिसका प्रतिवेदन प्रकाशित किया जा रहा है। सिसदेवरी उत्खनन से प्राप्त तथा संकलित महत्वपूर्ण कलाकृतियां महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय रायपुर में संग्रहित है। सिसदेवरी से प्राप्त कलाकृतियां प्रतिमा विज्ञान के विशिष्ट शैली के उदाहरण के रूप में कला समीक्षकों के द्वारा समादृत है। यहां की शिल्प कृतियों में ताला के सदृश्य कला अभिप्रायों की मौलिकता दर्शनीय है।

सिसदेवरी उत्खनन प्रतिवेदन के प्रकाशन के लिए विभागीय अधिकारियों सहयोगियों के द्वारा मुद्रण हेतु धैर्यपूर्वक संकलन, परीक्षण तथा अन्य प्रयासों के फलस्वरूप यह प्रकाशन साकार हुआ है। प्रस्तुत प्रकाशन पुराविद एवं कलामर्मज्ञों को सिसदेवरी की कला प्रतिमानों के अध्ययन एवं मूल्यांकन के लिए उद्वेरित करने की दिशा में एक प्रयास है। संस्कृति विभाग राज्य में संपादित उत्खनन, सर्वेक्षण एवं विशिष्ट पुरातत्वीय उपलब्धियों को प्रकाशन के माध्यम से विद्वानों एवं जन सामान्य को अवगत कराने के लिए कृत संकल्प है। सिसदेवरी उत्खनन प्रतिवेदन का प्रकाशन छत्तीसगढ़ अंचल के स्थापत्य वैभव को कला जगत में प्रतिष्ठित करने की दिशा में एक प्रयास है। प्रस्तुत प्रकाशन के लिए सतत रूप से प्रयत्नशील सभी सहयोगी अधिकारियों के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूं। मुझे विश्वास है कि यह प्रकाशन छत्तीसगढ़ की कला संस्कृति तथा पुरातत्व के अध्येताओं के साथ साथ शोधार्थियों के लिए भी उपादेय होगी।

संचालक
संस्कृति एवं पुरातत्व
रायपुर (छ.ग.)

विषय –सूची

1.	भूमिका	1 से 3
2.	मानचित्रों की सूची	4
3.	उत्खनन कार्य पूर्व पश्चात के छायाचित्रों की सूची	4 से 5
4.	उत्खनन से प्राप्त पुरावशेष, स्थापत्यखंड तथा कलाकृतियों के छायाचित्रों की सूची	5 से 6

अध्याय

1.	सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि	7 से 9
2.	भौगोलिक परिदृश्य तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	10 से 15
3.	मंदिर स्थापत्य	16 से 18
4.	उत्खनन से प्राप्त पुरावशेष, स्थापत्यखंड तथा कलाकृतियां	19 से 28
5.	निष्कर्ष	29 से 30

परिशिष्ट

1.	अन्य समीपस्थ स्थलों का सर्वेक्षण अन्वेषण	31 से 33
	मानचित्र	
	छायाचित्र	

1. भूमिका

दक्षिण कोसल स्थापत्य कला की दृष्टि से विशेष रूप से समृद्ध है। इस भू–भाग में मौर्यकालीन प्रमुख ऐतिहासिक अवशेषों में सरगुजा जिले में स्थित सीतावेंगरा की प्राचीनतम नाट्य शाला, सुतनुका देवदासी अंकित अभिलेख तथा मल्हार एवं अन्य स्थलों से ज्ञात प्राकार तथा परिखा युक्तगढ़ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इस क्षेत्र के बिलासपुर जिले में स्थित मल्हार से मौर्यकाल से लेकर कलचुरि काल तक के विभिन्न प्रकार के पुरावशेष मृण्मयी पात्र, मनके, सिक्के, अभिलेख, प्रतिमा फलक, मिट्टी के खिलौने, पकी मिट्टी की मुहरें आदि प्रचुरता से प्राप्त होते हैं। मौर्यों के पश्चात् दक्षिण कोसल में सातवाहनों के अधिकार के प्रमाण प्राप्त होते हैं।

स्थानीय राजवंशों में शरभपुरीय, पांडु अथवा सोमवंशी, रतनपुर के कलचुरि कवर्धा के फणिनाग एवं चककोट के छिन्दक नाग छठवीं सदी ईसवी से लगभग बारहवीं–तेरहवीं सदी ईसवी तक इस विस्तृत भूखंड में काल कमानुसार राज्य करते रहे हैं। अभिलेखों में दक्षिण कोसल का सर्वप्रथम उल्लेख समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति में मिलता है। जिसमें दक्षिण पथ के राज्यों की सूची में कोसल के महेन्द्र का नाम प्रथम कम में उल्लेखित है। गुप्त शासकों के अतिरिक्त, वाकाटक तथा मौखरि नरेशों से भी दक्षिण कोसल का सांस्कृतिक संबंध रहा है।

छठवी ईसवी सदी से लेकर आठवी–नवीं सदी के मध्य दक्षिण कोसल में स्थापत्य एवं मूर्तिकला का अत्यन्त भव्य रूप प्रकट होता है। इस काल में अंतराल से देवरानी–जेठानी मंदिर ताला, लक्ष्मणेश्वर मंदिर सिरपुर, राजीवलोचन मंदिर राजिम, इंदलदेउल मंदिर खरोद तथा डीपाडीह आदि स्थलों में अनेक भव्य मंदिरों का निर्माण हुआ। ये मंदिर अद्यावधि विद्यमान हैं तथा भारतीय कला की अमूल्य निधि हैं। दक्षिण कोसल में मंदिर के निर्माण के लिए उत्कृष्ट शिलाखण्ड (Best Quality Stone) के अल्प उपलब्धता के कारण इस क्षेत्र में ईटों के मंदिरों का अत्यधिक निर्माण होता रहा है। प्रस्तर की अपेक्षा ईट निर्मित मंदिर कम मजबूत तथा क्षरणशील होने के कारण प्राकृतिक कारणों से अत्यधिक संख्या में भग्न तथा नष्ट हुए हैं। ऐसे अनेक भग्न मंदिरों के अवशेष चिन्हांकित है इनमें से कुछ जीर्णोद्वार कर दिये जाने से नवीन रूप में परिवर्तित हो चुके हैं।

सिसदेवरी स्थित टीले का अन्वेषण वर्ष 1994 में उत्खनन कर्ता के द्वारा किया गया था। इस स्थल के उत्खनन हेतु वर्ष 2001–02 में प्रस्ताव तैयार कर राज्य शासन के

माध्यम से भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण नई दिल्ली को प्रस्तुत किया गया था। तदनुसार भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण नई दिल्ली के पत्र क्रमांक – ए/19/2001–ई.ई. दिनांक 11 जनवरी 2002 के द्वारा अनुमति प्राप्त कर उत्खनन कार्य संपन्न करवाया गया है। मैं तत्कालीन संचालक श्री प्रदीप पंत संचालक, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग का आभारी हूं जिन्होंने मेरा उत्साह वर्धन करते हुए इस कार्य के लिए प्रेरित किया। महानदी के तटवर्ती भू–भाग में स्थित पुरातत्वीय स्थलों में सिरपुर, पलारी तथा सिसदेवरी लगभग 25 कि.मी. की परिधि में स्थित हैं। सिरपुर तथा पलारी सोमवंशी शासकों के काल के प्रमुख स्मारकों के रूप में चिन्हित स्थल हैं। सिसदेवरी के टीले के उपर रखे भग्न कलाकृतियों के अवलोकन से इस स्थल के महत्व का ज्ञान हुआ एवं उत्खनन तथा सुरक्षा के लिए प्रयास किया गया।

सिसदेवरी के टीले के उत्खनन से लगभग छठवीं सदी ईसवी के अवशेष प्रकाश में आये हैं जो सोमवंशीय कला शैली से पूर्व दक्षिण कोसल के शरभपुरीय कला शैली का परिचायक हैं। सिसदेवरी रायपुर जिले में शरभपुरीय कला शैली के स्वतंत्र अस्तित्व का नवीन ज्ञात स्थल है। उत्खनन कार्य से प्रतिमायें तथा संरचना को छोड़कर यहां से अन्य महत्वपूर्ण लघु पुरावशेष प्राप्त नहीं हुए।

सिसदेवरी के उत्खनन कार्य में विभागीय सहयोगी सर्वश्री राहुल कुमार सिंह, उपसंचालक, तत्कालीन संग्रहाध्यक्ष, जिला पुरातत्व संग्रहालय बिलासपुर, प्रमोद कुमार पाण्डेय, कलाकार एवं पी.आर. कुन्जाम, मानचित्रकार स्थल पर निरंतर साथ रहकर कार्य सम्पादन के साथ–साथ प्रतिवेदन तैयार करने में सहयोग प्रदान किया है। इन सभी के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूं। कार्यालय के सर्व श्री रविराज शुक्ला, श्री किशोर कुमार साहू, एवं समीर टल्लू ने मनोयोग पूर्वक सज्जा एवं टंकण कार्य किया है।

सिसदेवरी के उत्खनन अवधि में श्री के.के. चक्रवर्ती, प्रमुख सचिव, वन एवं संस्कृति ने कार्य स्थल का अवलोकन कर सभी कार्यरत सहयोगियों का उत्साहवर्धन किया है, मैं उनका विशेष रूप से आभारी हूं।

इस पुस्तक के प्रकाशन में विभाग के अधिकारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इनमें से सर्वप्रथम वर्तमान संचालक श्री एन.के. शुक्ल, आई.ए.एस. का विशेष आभारी हूं जिन्होंने इसके प्रकाशन की अनुमति प्रदान की है। तत्पश्चात् विभागीय पुरातत्वीय अधिकारी एवं प्रभारी उत्खनन/सर्वेक्षण डॉ. शिवाकान्त वाजपेयी तथा प्रभारी प्रकाशन अधिकारी डॉ. कामता प्रसाद वर्मा तथा विभाग के अन्य सभी अधिकारियों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं जिन्होंने प्रकाशन कार्य में आवश्यक सहयोग प्रदान किया है।

अन्त में मैं महाप्रबंधक, छत्तीसगढ़ संवाद रायपुर को भी धन्यवाद देता हूं जिन्होंने इसके प्रकाशन का कार्य शीघ्रता से करने में सहयोग प्रदान किया है।

सिसदेवरी ग्राम के समस्त सम्माननीय नागरिकों को भी मैं धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने उत्खनन दल को सहज भाव से आत्मीयतापूर्वक सहयोग प्रदान किया है। अंत में यह प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुये मैं आशान्वित हूं कि विशेषज्ञ तथा शोधार्थी सिसदेवरी उत्खनन का मूल्यांकन करते हुये स्थल पर नवीन प्रकाश डालेंगे।

(जी.एल. रायकवार)
निदेशक
सिसदेवरी उत्खनन

2. मानचित्रों की सूची

1. भारत मे छत्तीसगढ़ की स्थिति
2. छत्तीसगढ़ राज्य में सिसदेवरी की स्थिति
3. सिसदेवरी स्थित प्राचीन टीले के आसपास ग्राम की बसाहट
4. सिसदेवरी प्राचीन टीला उत्खनन पूर्व
5. सिसदेवरी का प्राचीन टीला उत्खनन से ज्ञात संरचना
6. सिसदेवरी के आसपास स्थित अन्य पुरातत्वीय स्थल

3. उत्खनन कार्य पूर्व एवं पश्चात् के छायाचित्रों की सूची

❖ उत्खनन पूर्व

1. सिसदेवरी का प्राचीन टीला दक्षिण भाग
2. सिसदेवरी का प्राचीन टीला दक्षिण–पूर्वी भाग
3. सिसदेवरी का प्राचीन टीला पश्चिम–दक्षिण भाग
4. सिसदेवरी का प्राचीन टीला पश्चिम–पूर्वी भाग
5. सिसदेवरी का प्राचीन टीला दक्षिण–पूर्वी भाग
6. सिसदेवरी का प्राचीन टीला दक्षिण–पूर्वी भाग
7. सिसदेवरी का प्राचीन टीला पश्चिमी भाग
8. सिसदेवरी का प्राचीन टीला पूर्व–उत्तरी कोना
9. सिसदेवरी का प्राचीन टीला पश्चिमी भाग
10. सिसदेवरी का प्राचीन टीला पश्चिमी भाग

❖ उत्खनन पश्चात

1. सिसदेवरी का प्राचीन टीला दक्षिण भाग
2. सिसदेवरी का प्राचीन टीला दक्षिण–पूर्वी भाग
3. सिसदेवरी का प्राचीन टीला पश्चिम–दक्षिणी भाग
4. सिसदेवरी का प्राचीन टीला पश्चिम–पूर्वी भाग
5. सिसदेवरी का प्राचीन टीला दक्षिण–पूर्वी भाग
6. सिसदेवरी का प्राचीन टीला दक्षिण–पूर्वी भाग
7. सिसदेवरी का प्राचीन टीला पश्चिमी भाग
8. सिसदेवरी का प्राचीन टीला पूर्व–उत्तरी कोना
9. सिसदेवरी का प्राचीन टीला पश्चिमी भाग
10. सिसदेवरी का प्राचीन टीला पश्चिमी भाग

4. उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषों, स्थापत्य खण्ड तथा कलाकृतियों के छायाचित्रों की सूची

फलक 1 – चित्र 1 – नारी प्रतिमा का अधोभाग (नदी देवी)

चित्र 2 – पुरूष प्रतिमा का उर्ध्व भाग

फलक 2 – चित्र 3 – अर्द्धनारीश्वर शीर्ष भाग

चित्र 4 – अर्द्धनारीश्वर मध्य भाग

फलक 3 – चित्र 5 – द्वार शाखा का भाग

चित्र 6 – पुरूष प्रतिमा (द्वारपाल) का अधोभाग

फलक 4 – चित्र 7– पुरूष प्रतिमा का शीर्ष भाग

चित्र 8 – नारी प्रतिमा का हाथ

फलक 5 – चित्र 9 – खंडित हारावली

चित्र 10 – खंडित हाथ

फलक 6 – चित्र 11 – मोदक पात्र पकडे खंडित हाथ

चित्र 12 – पुष्पीय अलंकरण

फलक 7 – चित्र 13 – पुष्पीय अलंकरण

चित्र 14 – जटिलतम सूक्ष्म अलंकरण युक्त स्थापत्य खण्ड

फलक 8 – चित्र 15 – जटिलतम सूक्ष्म अलंकरण युक्त स्थापत्य खण्ड

चित्र 16 – बाण फलक

फलक 9– चित्र 17 – खंडित प्रस्तर चौकी

चित्र 18 – खंडित भुजा

फलक 10 – चित्र 19 – पुरूष प्रतिमा शीर्ष

चित्र 20 – भारवाहक गण

चित्र 21 – पूजित प्राचीन शिव लिंग

फलक 11– चित्र 22 – महारानी विक्टोरिया का सिक्का अग्रभाग

चित्र 23 – महारानी विक्टोरिया का सिक्का पृष्ठभाग

अध्याय 1
सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

सिसदेवरी रायपुर जिले के पलारी तहसील के अंतर्गत 82°10 अक्षांश उत्तर तथा 21°30 देशांश पूर्व के मध्य स्थित है। यह ग्राम, रायपुर से बलौदाबाजार–कसडोल सड़क मार्ग पर 61वें किलोमीटर पर स्थित ग्राम गिर्रा से पूर्व दिशा की ओर लगभग 6 कि.मी. की दूरी पर बसा हुआ है। गिर्रा ग्राम से बटगन–गिधपुरी जाने वाले कच्चे सड़क मार्ग से यहां आसानी से पहुंचा जा सकता है। यह स्थल महानदी के बायें कछार पर स्थित है तथा राजिम से सिरपुर, शिवरीनारायण–खरौद जाने वाले महानदी के तटवर्ती प्राचीन स्थल मार्ग में शैव धर्म के महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में स्थित रहा है। सिसदेवरी पहुंचने के लिये मुम्बई–हावड़ा रेल मार्ग पर स्थित भाटापारा निकटस्थ रेल स्टेशन है। इस स्टेशन पर सभी एक्सप्रेस तथा पैंसेजर रेलगाडियॉ रूकती हैं। इसके अतिरिक्त रायपुर सर्वाधिक उपयुक्त स्थल है जहां सभी प्रकार की आवासीय तथा वाहन सुविधा उपलब्ध है। रायपुर से कसडोल–बलौदाबाजार–पलारी मार्ग पर नियमित परिवहन सुविधायें उपलब्ध है। इस मार्ग पर 61 वें कि.मी. पर स्थित गिर्रा ग्राम से सिसदेवरी के मध्य नियमित वाहन सुविधा नही है अतः पैदल चलकर यहां पहुंचा जा सकता है।

सिसदेवरी से प्राप्त अवशेषों से इसके शैव संप्रदाय के कला केन्द्र के रूप में पुष्टि होती है तथापि ज्ञात क्षेत्रीय इतिहास के अभिलेखीय स्त्रोतों में इसका उल्लेख नहीं है। सिसदेवरी का सामान्य अर्थ "शिव का देवालय" है। देवरी, देउर शब्द देवालय का परिचायक है। छत्तीसगढ़ में देवरी नाम के अनेक ग्राम है तथापि कुछ ही ग्रामों में प्राचीन अवशेष पाये गये है। देवरी शब्द छत्तीसगढ़ी बोली का बहुप्रचलित शब्द है।

ऐतिहासिक काल में दक्षिण कोसल के सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि के स्त्रोत की एक अविरल परंपरा है। इस परंपरा के प्रारंभिक उदाहरण रामगढ़, मल्हार, बछौद, कोटमी–सोनार, ताला, गढ़धनोरा, सिरपुर, राजिम, खरोद, पुजारी पाली, पलारी, भोंगापाल, डीपाडीह, बेलसर, कलचा–भदवाही आदि उत्तरोत्तर प्राप्त होने लगते हैं। दक्षिण कोसल के ऐतिहासिक काल के अवशेषों में मिट्टी के प्राकार तथा परिखायुक्तगढ़, सिक्के, मृण्मयी वस्तुऐं, अभिलेख प्रतिमा फलक, प्रतिमायें तथा स्थापत्य अवशेष प्रमुख हैं। इनमें मंदिर स्थापत्य वैशिष्टय की दृष्टि से देवरानी–जेठानी मंदिर ताला तथा देउर मंदिर मल्हार दक्षिण कोसल की प्रारंभिक

काल की स्थापत्य संरचनायें है। ग्यारहवीं–बारहवीं सदी ईसवी में रतनपुर के कलचुरि, कांकेर के सोमवंशी कवर्धा के फणिनाग, तथा चककोट के छिंदक नाग शासकों के काल के विविध स्थापत्य अवशेष प्रमुख हैं। इनमें मल्हार, जांजगीर, पाली, नारायणपाल, भोरमदेव, बारसूर, बस्तर, गंडई आदि स्थल विशेष महत्वपूर्ण हैं।

दक्षिण कोसल की वास्तु परंपरा में प्रस्तर तथा पकी मिट्टी के ईटों का उपयोग विपुलता से प्राप्त होता है। पकी मिट्टी के ईटों के अनेक संरचनाओं के भग्नावशेष इस क्षेत्र में बहुतायत से प्राप्त हुये हैं। दक्षिण कोसल में स्थापत्य कला में प्रयुक्त पाषाण साधारण स्तर के है। ये पाषाण अल्प कठोर, खुरदरे, क्षरणशील, गांठदार तथा छिद्रित रवेदार हैं। इनमें दीर्घ स्थायित्व के गुण नहीं हैं। अतः अधिकांश भग्नावशेषों से प्राप्त कलाकृतियां अत्यधिक जीर्ण शीर्ण स्थिति में प्राप्त होती हैं। इसी प्रकार प्राकृतिक स्थिति में रखी पाषाण प्रतिमायें क्षरणशील प्रकृति के होने के कारण सौंदर्य विहीन, परतों में उखड़े तथा विकृत स्थिति में प्राप्त होते है।

सिसदेवरी स्थित भग्नावशेष ईट तथा प्रस्तर निर्मित संरचना रही है। ग्राम के मध्य स्थित होने के कारण यह संरचना अतिक्रमण, विविध मानवीय दुरूपयोग के साथ–साथ टीले पर उगे हुये जंगली वृक्षों के कारण निरंतर जीर्ण–शीर्ण तथा नष्ट होता रहा है। वर्तमान उत्खनन कार्य विगत अनेक शताब्दियों से जीर्ण–शीर्ण टीले पर दक्षिण कोसल की स्थापत्यकला के विलुप्त स्थल के पुरातात्विक महत्व को उजागर करने एवं प्रदेश के धरोहरों को सहेजने के उपकम का प्राथमिक चरण है। विगत शताब्दि के अंतिम दो दशकों में दक्षिण कोसल के जनजातीय बाहुल्य क्षेत्रों में अनेक पुरातत्वीय महत्व के स्थलों का अन्वेषण किया गया था जहां से विपुल पुरावशेष तथा स्थापत्य संरचना अनावृत किये गये थे। ऐसे स्थलों में देवरानी–जेठानी मंदिर ताला, भोंगापाल, गढ़घनोरा, डीपाडीह, कलचा–भदवाही तथा बेलसर विशेष महत्वपूर्ण रहे हैं। दक्षिण कोसल के उल्लेखित स्थलों की कला परंपरा ने देश विदेश के समग्र पुराविदों का ध्यान आकृष्ट किया था। उल्लेखित स्थलों में अनावृत शिल्पकृतियों तथा स्थापत्य संरचनाओं से भारतीय कला के इतिहास में दक्षिण कोसल की कला संस्कृति के नवीन पक्ष मुखरित हुये हैं।

सिसदेवरी का सर्वेक्षण वर्ष 1994–95 में जी.एल. रायकवार, पुरातत्ववेत्ता रायपुर के द्वारा किये जाने के पश्चात् विस्तृत प्रतिवेदन संचालनालय पुरातत्व एंव संग्रहालय मध्य

प्रदेश भोपाल को प्रेषित की गई थी तथा संरक्षण एवं उत्खनन हेतु सुझाव प्रेषित किये गये थे। छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना के पश्चात् नवीन छत्तीसगढ़ राज्य में सिसदेवरी में उत्खनन कार्य हेतु भारतीय पुरातत्वीय सर्वेक्षण नई दिल्ली द्वारा अनुज्ञा प्रदान किये जाने के पश्चात् मई 2002 में उत्खनन कार्य संपन्न करवाया गया है। सिसदेवरी के उत्खनन से दक्षिण कोसल की स्थापत्य कला तथा मूर्ति विज्ञान के नवीन पक्ष उद्घाटित हुये हैं। नवीन छत्तीसगढ़ राज्य में पुरातत्वीय स्थलों की श्रृंखला में, छठवीं–सातवीं सदी ईसवी के अवशेष स्थलों में सिसदेवरी, बिलासपुर जिले की देवरानी–जेठानी मंदिर ताला के कला शैली का समानान्तर स्पर्श करता है।

❑

अध्याय 2
भौगोलिक परिदृश्य तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना 1 नवम्बर 2000 को हुई है। इसके अंतर्गत मध्यप्रदेश राज्य के बिलासपुर, रायपुर तथा बस्तर संभाग के कुल 16 जिले सम्मिलित हैं। छत्तीसगढ़ राज्य की सीमा निर्धारण के फलस्वरूप इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश, दक्षिण में आंध्रप्रदेश, पूर्व में उड़ीसा, पश्चिम में महाराष्ट्र, उत्तर पूर्व में झारखंड तथा उत्तर पश्चिम में मध्यप्रदेश स्थित है। छत्तीसगढ़ राज्य का अधिकांश भू–भाग सतपुड़ा पर्वत की श्रेणियों से घिरा हुआ है। महानदी, शिवनाथ, रेंड, केलो, कन्हर, मनियारी, इन्द्रावती आदि नदियां यहां प्रवाहित होती हैं। इन्ही नदियों के तट पर ऐतिहासिक काल में अनेक नगर बसे, राजधानी स्थापित हुये, भव्य मंदिरों का निर्माण हुआ तथा सांस्कृतिक गतिविधियां पनपती रहीं। सिसदेवरी ग्राम का समीपस्थ क्षेत्र समतल मैदानी भूमि है। इसके पूर्व दक्षिण दिशा में लगभग 12 कि.मी. की दूरी से महानदी प्रवाहित है। ग्राम के आसपास का मैदानी भू–भाग में बबूल के सघन वन दूर दूर तक फैले हैं। इस ग्राम के आंतरिक भू संरचना में शैल तथा चूने के पत्थरों का समूह महानदी के तट तक फैला हुआ है। ये शैल समूह मुख्यतः बैगनी शैल चूनेदार सिलिकीय या रेतीले तथा चूने के पत्थर से मिलकर बने है। चिकनी काली मिट्टी युक्त भू सतह अत्याधिक उर्वर है। इस भाग में मिश्रित वन नहीं है। रायपुर जिले का औसत अधिकतम तापमान 41.9 अंश सेंटीग्रेड तथा वर्षा का वार्षिक औसत 1363.00 मि.मी. है। ग्रीष्म ऋतु में यहां अधिकतम तापमान 46 अंश से.ग्रे. रहता है। महानदी तथा इसकी सहायक नदियां शिवनाथ, मनियारी, अरपा, पैरी आदि इस क्षेत्र की जीवन दायिनी सरितायें है जिनके तट पर ऐतिहासिक काल में भिन्न भिन्न राजवंशों के काल के स्थापत्य अवशेष प्राप्त होते है। छत्तीसगढ़ के भौगोलिक परिवेश में महानदी तथा शिवनाथ का कछार समतल मैदान है इन्हें छोड़कर इसका अधिकांश भाग वन तथा पर्वत श्रृंखला से आच्छादित है। इस क्षेत्र के भौगोलिक परिवेश में सतपुड़ा पर्वत माला की विस्तृत शाखायें इसे बाह्य आक्रमण से सुरक्षा प्रदान करता था।

प्राचीन भारत के एतिहासिक कालखंड में यह भू–भाग दक्षिण कोसल के नाम से अभिहित होता रहा है। अभिलेखों, ताम्रपत्रों तथा संस्कृत के प्राचीन ग्रंथो में दक्षिण कोसल से संबंधित विवरण यत्र–तत्र प्राप्त होते है। इसके अतिरिक्त प्राचीन काल के चीनी यात्रियों के यात्रा विवरण में भी इस भू–भाग का उल्लेख मिलता है। दक्षिण कोसल के इतिहास का काल क्रमानुसार संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है –

प्रागैतिहासिक काल –

प्रागैतिहासिक काल के आदिमानवों के संस्कृति के परिचायक विविध प्रकार के पाषाण उपकरण तथा चित्रित शैलाश्रयों की खोज छत्तीसगढ़ के रायगढ़, सरगुजा तथा बस्तर जिले में पुराविदों के द्वारा की गई है। उपरोक्त शोध–अन्वेषणों से यह सिद्ध होता है कि देश के अन्य वनाच्छादित तथा गिरि–गह्वरों से युक्त क्षेत्रों के सदृश्य छत्तीसगढ़ का भू–भाग भी आदि मानवों के द्वारा संचारित था। प्रागैतिहासिक काल में छत्तीसगढ़ का अधिकांश भाग सघन वनों से आच्छादित था तथा विपुल वन्य पशु सर्वत्र विचरण करते थे। आखेट के लिये वन्य पशु, सतत प्रवाहित नदी–नाले, सुरक्षा तथा निवास के लिये पर्वत श्रेणियां प्रागैतिहासिक काल के आदि मानवों के जीवन निर्वाह के लिये सरलता से उपलब्ध होने के कारण छत्तीसगढ़ के भू–भाग में भी प्रागैतिहासिक कालीन आदि मानवों की संस्कृति विकसित होती रही है। इनके द्वारा निर्मित तथा प्रयुक्त विविध प्रकार के पाषाण उपकरण महानदी, शिवनाथ, मनियारी, हांफ, कन्हर, मांद, केलो, इन्द्रावती तथा अन्य नदियों के तटवर्ती क्षेत्रों से प्राप्त हुए हैं। इसी कम में रायगढ़ जिले में चित्रित शैलाश्रयों की श्रृंखला सिंघनपुर, कबरा पहाड़, बसनाझर, ओंगना, बोतल्दा (रायगढ़ जिला) के अतिरिक्त बस्तर तथा सरगुजा जिले में भी ज्ञात हुए हैं। ये चित्र गेरूआ लाल रंग से चित्रित हैं तथा इनके वर्ण्य विषय वन्य पशु, विविध जीव–जंतु, आखेट तथा युद्ध दृश्य हैं। पाषाणयुगीन संस्कृति के अंतिम चरण की झलक लौह युगीन महापाषाणीय शवाधान परंपरा के स्मारक–अवशेष करकाभाट, करहीभदर, चिरचारी, सोरर, बरतिया भाटा आदि स्थलों में वृहत रूप से उपलब्ध हुए हैं। महापाषाणीय शवाधान परंपरा अद्यतन बस्तर जिले में गोंड तथा माड़िया जनजाति में व्यवहृत है।

वैदिक काल, महाकाव्यों का युग तथा साहित्यिक स्त्रोत :

वैदिक साहित्य में दक्षिण कोसल से संबंधित सांस्कृतिक सूत्रों का अभाव है। रामायण एवं महाभारत के काल में आर्य संस्कृति से दक्षिण कोसल का संबंध कमशः जुड़ने लगा था। रामायण से ज्ञात होता है कि राम की माता कौशल्या, दक्षिण कोसल के राजा भानुमंत की पुत्री थी। ऐसी मान्यता है कि राम, वनवास काल में दक्षिण कोसल के वनों में निवास करते हुए दण्डकारण्य में प्रविष्ट हुये थे। दक्षिण कोसल के वन मार्गो से प्रविष्ट होकर दण्डकारण्य में विचरण तथा निवास किये थे। महाभारत के सभापर्व में पांडवों के राजसूय यज्ञ में सहदेव के द्वारा पूर्वी–दक्षिणी राज्यों के विजय अभियान के अंतर्गत सम्मिलित राज्यों में दक्षिण कोसल का भी उल्लेख प्राप्त होता है। इसी ग्रंथ के नल–दमयन्ती के आख्यान में विदर्भ के साथ कोसल का उल्लेख मिलता है। वराह मिहिर के बृहत्संहिता तथा वात्सायन

के कामसूत्र में भी कोसल का उल्लेख है। विभिन्न पुराणों के साथ–साथ संस्कृत साहित्य के प्राचीन ग्रंथ काव्य मीमांसा, दशकुमार चरित्र, उत्तर रामचरित आदि ग्रंथों में दक्षिण कोसल का उल्लेख प्राप्त होता है।

ऐतिहासिक काल :

ईसवी पूर्व तीसरी–चौथी में दक्षिण कोसल का भू–भाग नंद–मौर्य साम्राज्य के अंतर्गत रहा है। चीनी यात्री युवान–च्वांग के यात्रा–विवरण से ज्ञात होता है कि मौर्य सम्राट अशोक ने दक्षिण कोसल में सहस्त्रों स्तूपों का निर्माण करवाया था। सम्राट अशोक के राजनैतिक प्रभाव के क्षेत्रों में कलिंग तथा दक्षिण कोसल, मगध साम्राज्य के सन्निकट के क्षेत्र रहे हैं। मौर्यकालीन पुरातत्वीय स्थल में सरगुजा जिले के रामगढ़ की पहाड़ी में स्थित सीताबेंगरा गुफा भारत के प्राचीनतम नाट्यशाला के रूप में प्रसिद्ध है। लक्ष्मण बेंगरा गुफा में मौर्यकालीन लिपि में गुफालेख है जिसमें सुतनुका नामक देवदासी तथा देवदत्त नामक रूपदक्ष का उल्लेख है। मौर्यकाल के अन्य अवशेषों में मिट्टी के प्राकार तथा परिखायुक्त गढ़, विविध प्रकार के लघु पुरावशेष तथा सिक्कों की दृष्टि से मल्हार छत्तीसगढ़ का सर्वाधिक समृद्ध पुरातत्वीय स्थल है। इस क्षेत्र में मल्हार, रामगढ़, ठठारी आदि स्थानों से मौर्यकालीन आहत सिक्के मिले हैं। मौर्यकालीन परिखा तथा प्राकार युक्त गढ़ों की परंपरा दक्षिण कोसल में कलचुरि काल (11वीं–12वीं सदी ईसवी) तक व्यवहृत होती रही है।

मौर्यों के पश्चात् दक्षिण कोसल का अधिकांश भाग सातवाहनों के प्रभाव क्षेत्र के अंतर्गत सम्मिलित रहा है। सातवाहन काल के अनेक सिक्के इस क्षेत्र से मिले हैं, जिनमें कुछ सिक्के में शासकों के नाम भी मिलते हैं। चीनी यात्री युवान–च्वांग के यात्रा विवरण में उल्लेख है कि प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक नागार्जुन दक्षिण कोसल की राजधानी के निकट स्थित विहार में निवास करते थे तथा उस समय वहां का राजा सातवाहन था। गुंजी अभिलेख में कुमारवरदत्तश्री नामक राजा का उल्लेख है जो सातवाहन नरेश ज्ञात होता है। किरारी से प्राप्त काष्ठ स्तंभ लेख भी सातवाहन कालीन है। सातवाहनों के समकालीन कुषाण राजाओं के तांबे के सिक्के इस क्षेत्र से बहुतायत से प्राप्त होते हैं तथापि कुषाणों के आधिपत्य के संबंध में किसी भी स्त्रोत से जानकारी प्राप्त नहीं होती है।

सातवाहनों के पश्चात् मघ वंश के राजाओं के सिक्कों से मघ राजाओं के शासन की जानकारी मिलती है। मघ राजाओं के सिक्के छत्तीसगढ़ अंचल में मल्हार से मिलते हैं। चौथी–पांचवी सदी ईसवी में स्थानीय राजवंश के आधिपत्य के अभिलेखीय साक्ष्य प्राप्त होते हैं। गुप्त वंश के सम्राट समुद्रगुप्त के प्रयाग–प्रशस्ति में दक्षिणापथ के दिग्विजिय अभियान

में दक्षिणापथ के राजाओं के नामावली में कोसल के राजा महेन्द्र का उल्लेख प्रथम कम में किया गया है। इस क्षेत्र के बानवरद तथा कुलिया से गुप्त शासकों के स्वर्ण सिक्के प्राप्त हुए हैं।

दक्षिण कोसल के अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रीय शासकों में 'नलवंश' उल्लेखनीय है। इस वंश के शासकों में से वराहराज, नंदनराज और स्तंभ नामक राजाओं के उभारदार ठप्पांकित सिक्के कमशः अडेंगा तथा कुलिया नामक स्थल से प्राप्त हुए हैं। इस वंश के एक शासक विलासतुंग का अभिलेख राजिम से भी ज्ञात है। लगभग 5वीं सदी ईसवी में दक्षिण कोसल के क्षेत्रीय राजवंशों की परंपरा में शरभपुरीय राजवंश विशेष महत्वपूर्ण है। इस राजवंश का संस्थापक शरभ था तथा इनकी राजधानी शरभपुर में थी। इस वंश के शासक प्रसन्नमात्र के द्वारा प्रचलित सोने, चांदी तथा तांबे के उभारदार ठप्पांकित सिक्के मल्हार तथा ताला से प्राप्त हुए हैं।

शरभपुरीय शासकों के पश्चात् दक्षिण कोसल क्षेत्र में सोमवंशी शासकों का आधिपत्य स्थापित हुआ। अभिलेखों में इन्हें पांडुकुल भी कहा गया है। इस वंश की राजधानी सिरपुर में स्थित थी। इस वंश के शासक हर्षगुप्त का विवाह मगध के मौखरि राजा सूर्यवर्मा की पुत्री वासटा के साथ संपन्न हुआ था। हर्षगुप्त के देहावसान के पश्चात् उनकी पत्नी रानी वासटा ने अपने स्वर्गीय पति के स्मृति में हरि (विष्णु) के भव्य मंदिर का निर्माण सिरपुर में करवाया था। ईंटों से निर्मित यह देवालय स्थापत्य कला की दृष्टि से भारत के ईंट निर्मित मंदिरों में सर्वोत्कृष्ट है। यह अभी भी सुरक्षित स्थिति में है। हर्षगुप्त का पुत्र महाशिवगुप्त बालार्जुन इस वंश का यशस्वी एंव प्रतापी शासक था। इसके शासन काल में सिरपुर की सर्वाधिक उन्नति हुई। दक्षिण कोसल के इतिहास में इस काल में शैव, वैष्णव, बौद्ध तथा जैन धर्म से संबंधित कला–संस्कृति विशेष रूप से पल्लवित हुई। महाशिवगुप्त बालार्जुन स्वयं शैव होते हुए भी सभी धर्मों के प्रति उदार तथा सहिष्णु था। इस काल में सिरपुर धर्म और कला के एक केन्द्र के रूप में दूर–दूर तक विख्यात हो चुका था। सिरपुर के उत्खनन से बौद्ध बिहार, शैव मंदिर, प्रतिमाएं तथा विविध पुरावशेष प्राप्त हुए हैं।

सोमवंशी शासकों के पराभव के पश्चात् इस क्षेत्र में राज करने वाले राजवंशों में रतनपुर के कलचुरि राजवशं का इतिहास गौरवमय है। इस वंश की प्रांरभिक राजधानी तुम्माण में स्थापित थी। बाद में रत्नदेव प्रथम ने रतनपुर में राजधानी स्थापित कर अनेक देवालय तथा सरोवरों का निर्माण कराया। रतनपुर के कलचुरि काल के स्मारक एवं अवशेष मल्हार, रतनपुर, पाली, जांजगीर, गोड़ी किरारी, गनियारी, आंरग, रामपुर, नगपुरा आदि स्थलों में विद्यमान हैं।

कलचुरियों के समकालीन कवर्धा जिले के भू–भाग में फणिनागवंश के शासक राज्य करते थे। फणिनागवंश के शासन काल के अवशेष भोरमदेव, बिरखा घटियारी, गंडई, देववालोदा, कामठी, वकेला आदि स्थलों में उपलब्ध हुए है। फणिनाग शासकों के काल में निर्मित भोरमदेव मंदिर अत्यंत कलात्मक है। महानदी के उद्‌गम क्षेत्र सिहावा नगरी के आसपास कांकेर के सोमवंशी शासकों के आधिपत्य की जानकारी अभिलेखीय साक्ष्यों से पुष्ट होती है। दक्षिण कोसल के सुदूर दक्षिण–पूर्वी भाग में बस्तर के छिन्दक नागवंश के शासक राज्य कर रहे थे। इनकी राजधानी चककोट तथा बस्तर में स्थापित थी। छिन्दक नागों के काल के अनेक स्मारक बारसूर, नारायणपाल, कुरूसपाल आदि स्थलों में अवशिष्ट हैं। कलचुरि तथा छिंदक नागों में आपसी प्रतिद्वन्द्विता बनी रहती थी।

साहित्य एवं अभिलेखीय साक्ष्यों से दक्षिण कोसल के तत्कालीन निकटवर्ती राज्यों की जानकारी प्राप्त होती है जिसमें इसकी भौगोलिक स्थिति पर प्रकाश पड़ता है। इसके उत्तर में त्रिपुरी और मेकल, दक्षिण में महाकान्तार, पूर्व में कलिंग और उत्कल, तथा पश्चिम में बैनगंगा (वेणातट) का क्षेत्र स्थित था। उल्लेखित क्षेत्र के मध्य स्थित भू–भाग दक्षिण कोसल के नाम से जाना जाता रहा है।

दक्षिण कोसल के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में विभिन्न राजवंशों का पर्याप्त योगदान रहा है। यह उल्लेखनीय तथ्य है कि दक्षिण कोसल की राजधानी विभिन्न काल में अलग–अलग स्थलों में स्थापित रही है। अतः कला संस्कृति का व्यापक प्रचार–प्रसार के साथ–साथ कला शैली में विभिन्नता दिखाई देती है। इनमें मल्हार, ताला, सिसदेवरी, राजिम, सिरपुर, तुमान तथा रतनपुर प्रमुख है। स्थापत्य कला के क्षेत्र में दक्षिण कोसल की प्रारंभिक कला संस्कृति में मौलिकता के दर्शन होते है जिसमें रूप, लावण्य तथा भाव–भंगिमा में शास्त्रीय अनुशीलन के साथ–साथ आंचलिक प्रभाव तथा शैलीगत विविधता का भी समावेश है। तालमान की दृष्टि से इनमें संतुलन तथा सम्मिति भी है। दक्षिण कोसल में 6वीं सदी ईसवी के स्थापत्य कला में देवरानी–जेठानी मंदिर विलक्षण है जो भारतीय कला में असामान्य है।

दक्षिण कोसल के प्रारंभिक स्थापत्य कला के उदाहरणों में मौलिक कला के दर्शन होते है जिसमें रूप, लावण्य तथा भाव–भंगिमा में शास्त्रीय अनुशीलन के साथ–साथ आंचलिक मौलिकता तथा लोकरूचि का निर्वहन है। तालमान की दृष्टि से भी इनमें संतुलन तथा सम्मिति है। दक्षिण कोसल के प्रारंभिक काल के स्थापत्य कला के प्रतिनिधि स्मारक देवरानी–जेठानी मंदिर में शिल्पीय मौलिकता एवं विलक्षणता सर्वत्र प्रदर्शित है जो भारतीय कला में अद्वितीय है।

सिसदेवरी ग्राम के प्राचीन टीले में उत्खनन कार्य से ज्ञात स्थापत्य संरचना तथा प्रतिमा विज्ञान में देवरानी–जेठानी मंदिर ताला के अलंकरण अभिप्रायों की सादृश्यता तथा मूर्तिशिल्प में मौलिक कल्पना सन्निहित हैं।

सिसदेवरी नाम से सामान्य रूप से शिव के मंदिर का बोध होता है। यह ग्राम प्राचीन स्थल है। भग्नावशेषों के टीले से लगभग 50 मीटर की दूरी पर मंदिर के दक्षिण दिशा में एक प्राचीन सरोवर स्थित है। यह सरोवर चारों ओर से तराशे गए पत्थरों से सुदृढ़ता के साथ बंधा हुआ है तथा मंदिर के समकालीन प्रतीत होता है। इसी के निकट लगभग सौ–डेढ़ सौ वर्ष पुराना तालाब है जो पानी के मार्ग के अवरूद्ध हो जाने से सूखा बना रहता है। प्राचीन भग्नावशेषों के टीला से लगभग 100 मीटर की दूरी पर पूर्व दिशा की ओर इस सूखे तालाब के तट पर इसी के समकालीन ईंटों से निर्मित लगभग सौ–डेढ़ सौ वर्ष पुराना मंदिर है। इस मंदिर के निर्माण के साथ ही साथ इस तालाब का निर्माण तत्कालीन मालगुजार परिवार के द्वारा करवाया गया प्रतीत होता है। तथापि ग्रामवासियों से इस मंदिर के निर्माण के संबंध में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त नहीं होती है। ग्राम में पश्चिमी भाग में भी एक पुराना सरोवर है। ग्राम के इस भू–भाग में प्राचीन काल में तत्कालीन बसाहट रही है।

भौगोलिक दृष्टि से यह विशेष महत्वपूर्ण है कि दक्षिण कोसल के महत्वपूर्ण पुरातत्वीय स्थल मल्हार, ताला, पलारी, सिसदेवरी गिधपुरी तथा सिरपुर सभी 82 अंश उत्तरी अक्षांश पर स्थित हैं। दक्षिण कोसल का सांस्कृतिक संबंध उड़ीसा, मगध तथा उत्तर भारत के समकालीन राजवंशों के साथ दीर्घकाल तक बना रहा है। इस अंचल के राजनैतिक इतिहास में एक ही काल में इसके अलग–अलग भू–भाग में भिन्न–भिन्न राज्यवंश शासन करते रहे है।

❑

अध्याय 3
मंदिर स्थापत्य

सिसदेवरी में चिह्नित स्थल पर उत्खनन प्रारंभ करने के पूर्व जीर्ण टीले के उत्तर तथा पूर्व दिशा में निजी आवास गृह सटे हुये थे। दक्षिण दिशा में ग्राम का प्रमुख मार्ग टीले से सटा हुआ था। इसी प्रकार पश्चिम दिशा की ओर ग्रामवासियों के द्वारा निर्मित प्रस्तर की दीवार भी टीले से सटी हुई थी तथा सड़क के दूसरी ओर निजी आवासगृह निर्मित किए गए हैं। टीले के उपर दो विशाल आकार के अकोल के जंगली वृक्ष एवं अन्य झाड़ियां उगे हुये थे। इस टीले पर ग्राम वासियों के द्वारा पूर्व में खोदकर कुछ प्रतिमाओं को निकालने के पश्चात् मुरूम पाट कर समतल कर दिया गया था तथा ठाकुर देव (स्थानीय ग्राम देवता) के स्थल के रूप में परिवर्तित कर पूजा करते थे। उत्खनन कार्य से निकले हुये मलवे को फेकने के लिये भी यहाँ समीप में जगह नहीं थी। अतः ग्राम के गलियों में दूर–दूर तक मलवे को फेंकना बिखराना पड़ा। ग्राम के मध्य में स्थित होने के कारण ग्रामवासियों के द्वारा इसे निरंतर क्षति पहुंचाई जाती रही है जिससे यह अत्यधिक नष्ट हुआ है। मंडप तथा सोपान के अनेक टुकड़ों में टूटे हुये शिलाखंड तथा स्थापत्यखंडों पर गैंती तथा सब्बल के निशानों के आधार पर यह अनुमान पुष्ट होता है कि लगभग 100–150 वर्ष पूर्व इस टीले को निर्ममता पूर्वक खोदा गया है और स्थापत्य खंडों को अन्यत्र ले जाकर प्रयुक्त कर लिया गया है।

सिसदेवरी के टीले के उत्खनन से ज्ञात संरचना प्राचीन शिवमंदिर है। यह संरचना अत्यधिक क्षतिग्रस्त तथा नष्ट प्राय है। दक्षिण कोसल के छठवीं–सातवीं सदी ईसवी के अधिकांश मंदिरों के सदृय यह मंदिर भी ईंट और प्रस्तरों से निर्मित रहा है। उत्खनन कार्य से मंदिर का प्रस्तर निर्मित मंडप, सोपान तथा गर्भगृह का अवशेष ज्ञात हो सका है। मंडप तथा सोपान प्रस्तर निर्मित है। यह तीन ओर से पकी हुई ईटों से निर्मित अधिष्ठान से पूर्व, उत्तर एवं दक्षिण दिशा की ओर घिरा हुआ था। पश्चिम दिशा की ओर मंदिर का मुख रहा है। उत्खनन कार्य से संरचना का ज्ञात तल योजना निम्नानुसार है–

मंडप–मंडप पर स्तंभों के अवशेष नही मिले हैं। अर्धमंडप तथा मंडप पूर्णतः विनष्ट है। इसके दायें ओर (उत्तर दिशा में) ईटो से निर्मित भित्ति संरचना है। बायां पार्श्व अर्थात दक्षिण दिशा की भित्ति सड़क होने के कारण पूर्णतः नष्ट हो चुकी है। मंडप का आकार 5.6 X 2.6 मीटर (क्षेत्रफल 14.56 वर्ग मीटर) है। मंडप का फर्श अलग–अलग आकार के प्रस्तरों से निर्मित रहा है। साथ ही साथ कुछ प्रस्तरों पर कुटिल देवनागरी लिपि में लेख उत्कीर्ण है। ये लेख अस्पष्ट रूप से दृष्टव्य हैं। मंडप की संरचना में किसी भी प्रकार की अर्द्धस्तभ अथवा स्तंभों के प्रमाण ज्ञात नहीं हुये है। इसके फर्श में प्रयुक्त पत्थर असंतुलित

आकार प्रकार के है। साथ ही साथ टूटे हुये है। इससे यह अनुमान होता है कि मंदिर के निर्माण के पश्चात् भग्न होने की स्थिति में इसे क्षतिग्रस्त किया गया है।

सोपान–उत्खनन से संरचना में कुल 6 (छः सोपान) अनावृत हुये हैं। प्रारंभ के दो सोपानों की लम्बाई 5.6 मीटर है। इसके पश्चात् तीसरे चौथे और पांचवे क्रम की सोपान की लम्बाई पार्श्व प्रतिमा स्थल होने के कारण कम है। अंतिम छठवें कम के सोपान की लम्बाई प्रथम और द्वितीय कम के सोपान के बराबर 5.6 मीटर है। प्रत्येक सोपान की चौडाई 60 से.मी. है। सोपान के पश्चात् अंत में एक समतल शिला खंड प्राप्त हुआ है जिसका आकार 225 से.मी. लंबा तथा 90 से.मी. चौड़ा है। इस पर प्रत्येक कोने पर चारों ओर चौकोर खांचे बने हुये है। इन खांचो पर दोनों पार्श्वभाग में शिलाखंड स्थापित रहे होंगे। इस शिलाखंड का उपयोग अनिश्चित है। अनुमान है कि यह शिलाखंड गर्भगृह में प्रमुख अधिष्ठाता प्रतिमा के छत पर वितान सदृश्य प्रयुक्त रहा होगा।

सोपान कमांक 5 (पांच) तथा 4 (चार) में नदी देवी तथा अलंकरण युक्त सम्मुख दर्शन युक्त द्वार शाखा की योजना रही है। सोपान कमांक तीन में आमने–सामने मुख किये हुये गणों की प्रतिमा प्रस्थापित रही होगी। उत्खनन से उत्तर दिशा की ओर इसमें एक स्थूल प्रतिमा का अधोभाग प्राप्त हुआ है जो संभवतः गण अथवा द्वारपाल की प्रतिमा है। इस भाग के मलवे मे द्वारशाखा के दो खंडित भाग प्राप्त हुये है जिस पर नारी प्रतिमा का अंकन है।

अंतराल तथा गर्भगृह – सोपान क. 3 तथा 4 में आमने–सामने तथा सम्मुख दर्शनयुक्त गण और द्वारशाखा को अंतराल माना जा सकता है। सोपान क. 5 के पश्चात् संरचना में गर्भगृह की स्थिति पूर्णतः नष्ट हो चुकी है। अनुमानतः सोपान क. 5 से संलग्न गर्भगृह जगती के ऊपर स्थापित द्वितीय भद्रपीठ पर निर्मित रहा होगा। उत्खनन में आमलक शिला एवं कलश के अवशेष नहीं मिले हैं। ज्ञात संरचना में मंदिर के गर्भगृह का तल विन्यास स्पष्ट नहीं है तथा विरूपित स्थिति में अवशिष्ट है।

संरचना की जगती तीन ओर से (पूर्व, उत्तर तथा दक्षिण) ईटों से निर्मित है जिस पर उर्ध्व विन्यास की योजना थी। जगती का भाग अत्यधिक क्षत्त–विक्षत्त एवं जीर्ण शीर्ण स्थिति में है तथा गहराई तक परत में जमे हुये ईट निरंतर क्षत्त–विक्षत्त स्थिति में होने से मंदिर के तल–विन्यास सहित उर्ध्व विन्यास अनिश्चित आकार–प्रकार में है। ग्रामवासियों के द्वारा इस पर निरंतर कंडे थापने तथा अन्य उपयोग के कारण ईटों की मृदा कठोरता (Texture) सुदृढ़ स्थिति में नहीं रह गई है तथा क्षरित प्रायः है। यहां पूर्व में पशुओं के बांधे जाने एवं अन्य उपयोग के कारण अधिष्ठान अस्त–व्यस्त स्थिति में प्राप्त हुआ है। संरचना में प्रयुक्त ईट का आकार 35 X 20 X 12 से.मी. है।

इस टीले के उत्खनन से किसी भी प्रकार का मृण्मयी सामग्री, मृदमांड, ठीकरे, मनके, प्रतिमा, फलक, प्राचीन सिक्के आदि अनुपलब्ध रहे हैं।

❑

अध्याय 4
सिसदेवरी के उत्खनन से प्राप्त पुरावशेष

सिसदेवरी के उत्खनन से प्राप्त स्थापत्य खंड तथा कलाकृतियों का संक्षिप्त विवरण, सामग्री का काल, क्रमांक 1 से 47 तक 6वीं–7वीं सदी ईस्वी है तथा क्रमांक 48–49 की सामग्री अन्य काल की है। इनकी संक्षिप्त जानकारी निम्नानुसार है:–

1. **स्थापत्य खंड**

   सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

   आकार – 15 X 5.5 से.मी.

   काल – 6–7 वीं सदी ई.

   विभिन्न पुष्प हारों से निर्मित कलात्मक हारावाली अलंकरण युक्त खंडित शिल्पकृति।

2. **स्थापत्य खंड**

   सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

   आकार – 14 X 11 से.मी.

   काल – 6–7 वीं सदी ई.

   पुष्पीय अलंकरण युक्त खंडित स्थापत्य खंड। सामग्री का काल 6–7 वी सदी ई. है। सामग्री का काल 6–7 वी सदी ई. है।

3. **स्थापत्य खंड**

   सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

   आकार – 18 X 9 से.मी.

   काल – 6–7 वीं सदी ई.

   सम्मुख रेखाकृतियों से अलंकृत तथा पार्श्व में समतल सतह युक्त स्थापत्य खंड का टुकड़ा।

4. **स्थापत्य खंड**

   सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

   आकार – 15 X 5.50 से.मी.

   काल – 6–7 वीं सदी ई.

   विभिन्न पुष्पहारों से निर्मित कलात्मक हारावली अलंकरण युक्त खंडित शिल्पकृति।

5. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 21 X 5 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

विभिन्न पुष्पहारों से निर्मित कलात्मक हारावली अलंकरण युक्त खंडित शिल्पकृति।

6. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 13.5 X 7 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

अष्टदल पुष्पीय अलंकरण युक्त खंडित भाग।

7. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 12 X 13 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

पुष्पदल तथा वानस्पतिक अभिप्राय उत्खचित स्थापत्य खंड।

8. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 15 X 7 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

किसी नारी प्रतिमा के शिरोभाग पर प्रदर्शित आम्रगुच्छ तथा पल्लव अलंकरण युक्त अलंकृत शिल्प खंड।

9. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 19 X 9 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

चतुर्दल पुष्पीय अलंकरण तथा ज्यामितिय आकृति उत्खचित अर्धगोलाकार विलग परत जो किसी स्तंभ का भाग है।

10. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 16 X 11 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

द्वि पार्श्वीय पुष्पीय अलंकरण युक्त खंडित स्थापत्य खंड।

11. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 9 X 4 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

पुष्प तथा रूद्राक्ष अलंकृत शिल्पकृति का टुकड़ा।

12. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 9 X 4 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

विभिन्न पुष्पहारों से रज्जु के सदृश्य बटकर निर्मित कलात्मक हारावली अलंकरण युक्त खंडित शिल्प कृति का लघु टुकडा।

13. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 24 X 11 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

सूक्ष्म ज्यामितिय अलंकरण तथा पुष्पीय अकृति उत्खचित, अर्ध गोलाकार स्तंभ सदृश्य अलंकरण युक्त खंडित स्थापत्य खंड।

14. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 14.50 X 11 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

विभिन्न पुष्पीय आकृतियों तथा सूक्ष्म ज्यामितिय अलंकरण युक्त अर्धगोलाकार शिल्पकृति।

15. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 14 X 11 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

सूक्ष्म ज्यामितिय अलंकरण तथा पुष्पीय आकृति उत्खचित अर्धगोलाकार स्तंभ सदृश्य अलंकरण।

16. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 13 X 10.5 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

सूक्ष्म ज्यामितिय अलंकरण तथा पुष्पीय आकृति उत्खचित अर्धगोलाकार स्तंभ सदृश्य अलंकरण।

17. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 19.5 X 11 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

सूक्ष्म ज्यामितिय अलंकरण तथा पुष्पीय आकृति उत्खचित अर्धगोलाकार स्तंभ सदृश्य अलंकरण।

18. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 18 X 12.5 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

सूक्ष्म ज्यामितिय अलंकरण तथा पुष्पीय आकृति उत्खचित अर्धगोलाकार स्तंभ सदृश्य अलंकरण।

19. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 27 X 12 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

सूक्ष्म ज्यामितिय अलंकरण तथा पुष्पीय आकृति उत्खचित अर्धगोलाकार स्तंभ सदृश्य अलंकरण।

20. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 8 X 7 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

अर्धस्तंभ पर शीर्ष भाग में प्रदर्शित लघु आमलक।

21. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 15 X 5.5 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

किसी नारी प्रतिमा का हारावली पकड़े लघु आकार का खंडित दायां हाथ। कलाई पर कंकण दृष्टव्य है।

22. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 14 X 8.5 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

लघु आकार का प्रतिमा शीर्ष। शिरोभाग पर महीन केशों से सज्जित उभारयुक्त केश विन्यास है।

23. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 19 X 3 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

विभिन्न पुष्पहारों से निर्मित कलात्मक हारावली अलंकरण युक्त खंडित शिल्पकृति।

24. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 28 X 9 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

खंडित शिल्प कृति का परिधान का भाग जिसकी किनारी कलात्मक चुन्नट में गुंथी हुई है।

25. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 18 X 16 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

किसी विशाल आकार के प्रतिमा के बायें हथेली का भाग जो मोदक पात्र लिये हुये है। यह दो परतों में पृथक पृथक है।

26. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 18 X 17 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

पुष्पीय हारावली पकड़े हुई किसी नारी प्रतिमा का खंडित हाथ। कलाई पर कंकण तथा वलय अवशिष्ट है।

27. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 10 X 8 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

पल्लव तथा आम्र गुच्छ युक्त खंडित शिल्प खंड।

28. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 22 X 8.5 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

द्विपार्श्वीय पुष्पीय अलंकरण युक्त खंडित स्थापत्य खंड।

29. **खंडित हाथ**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 24 X 8 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

अस्पष्ट वस्तु पकड़े हुये किसी प्रतिमा का बायें हाथ की खंडित कलाई।

30. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 21 X 14 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

पुष्पीय आकृतियां उत्खचित स्थापत्य खंड का विलग परत।

31. **खंडित भुजा**

32. अवाप्ति कमांक –

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 24 X 11 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

खंडित भुजा का भाग जिस पर अत्यंत कलात्मक भुजबंध क्षरित स्थिति में दृष्टव्य है। भुजबंध पर मध्य में लघु रूप में मयूरारूढ़ कार्तिकेय का अंकन है। मयूर के पंख दोनों ओर फैले हुये है तथा दोनो पैर भग्न है। कार्तिकेय का मुख क्षरित है। नीचे अधिष्ठान भाग पर दाये ओर उड़ते हुये मानव आकृति तथा बायें ओर अश्व का अंकन है। उल्लेखित खंडित भुजा किसी विशाल आकार के प्रतिमा के भुजा का भाग है। यह शिल्पकृति ग्राम के श्री नेहरू चन्द्राकर जी के मढ़िया से संकलित की गई है।

32. **पत्थर का सिल**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 15 X 12 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

खुर (आधार) युक्त पत्थर के सिल का आधा टुकड़ा। इसका उपरी सतह उपयोग से घिसा हुआ तथा चिकना है। इसे ग्राम के डोंगिया तालाब से संग्रहित की गई है।

33. **खंडित पैर**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 16 X 9 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

किसी प्रतिमा के पैर का खंडित टुकड़ा जिस पर मकराकृति पैरी (पादवलय) है तथा मुख में पूंछ निगलते हुये मकर का कलात्मक अंकन है।

34. **स्थापत्य खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 20 X 12 X 12 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

पत्रावली अलंकरण युक्त क्षरित स्थापत्य खंड। उर्ध्व भाग की गोलाई अधिक है तथा अधोभाग संकुल है।

35. **प्रतिमा शीर्ष**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 25 X 19 X 9 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

किसी देव पुरूष का शीर्ष भाग जिस पर दोनों ओर बुदबुदाकर आकर्षक केश विन्यास सहित मध्य में केशों का गोल गुच्छा भी दृष्टव्य है इस शिल्प कृति का दायां नेत्र तथा नासिका भग्न है। प्राकृतिक कारणों से यह प्रतिमा आंशिक रूप से क्षरित है। यह कलाकृति ग्राम के श्री किसुन चंद्राकर के आंगन में रखी थी जिसे संकलित किया गया है।

36. **अर्धनारीश्वर का शीर्ष भाग**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 33 X 21 X 15 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

अर्धनारीश्वर का यह खडित शीर्ष भाग मौलिक कलात्मक अभिप्रायों से संयुक्त है। प्रतिमा के गोलाकार मुख पर दायें ओर मूंछ तथा भाल पर अर्धचन्द्र दृष्टव्य है। बायें भाल पर कदली पत्र पंक्ति धूंघट के सदृश्य अंकित है। शिरोभाग पर केशराशि मध्य से विभाजित है। सिर पर सबसे उपर के अर्धगोलाकार केश सज्जा का दायां भाग जटाजूट से तथा बायां भाग पुष्प गूच्छ से निर्मित है जो तल पर कस कर लिपटा–बंधा है। इसके नीचे दायें ओर विकसित पद्म है जिससे समानान्तर कम से जटा की लटें नीचे की ओर उतरती हुई सयोजित हैं। बायें शीर्ष पर सम्मुख भाग में मुक्तागुंफित लड़िया सयोजित है एवं पार्श्व में मकरमुख अलंकरण अभिप्राय, पुष्पीय सज्जा सहित अन्य कलात्मक अभिप्राय अंकित हैं। यह अंशतः क्षरित स्थिति में है।

37. **अर्धनारीश्वर का मध्य भाग**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 75 X 33 X 18 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

शीर्ष भग्न अर्धनारीश्वर प्रतिमा के मध्य भाग पर बायें ओर स्तन दृष्टव्य है। कंठ में चन्द्रहार है। भुजायें भग्न हैं। दायें कटि पर लहरियादार परिधान जांघ तक आवृत है। बायें कटि पर किंकणियों से गुंथा कटिसूत्र तथा घुटनों तक आवृत्त कलात्मक परिधान विस्तीर्ण है। इसके उपर से दांये ओर के कांछ से लिपटा हुआ व्याघ्र पूंछ सम्मुख भाग से होकर बायें जांघ पर झूल रहा है। प्रतिमा के निचले दोनों पैर भग्न है।

38. **अर्धनारीश्वर प्रतिमा का अधिष्ठान**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 60 X 60 X 18 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

यह अत्यधिक खंडित तथा क्षरित स्थिति में है। अधिष्ठान के उपर नंदी का खंडित पृष्ठ भाग दृष्टव्य है। सबसे नीचे बायें ओर अत्यंत कलात्मक सिंहमुख का अंकन है जिसके नासिकाछिद्र से मुक्ताहार निःसृत है। अधिष्ठान का दायां भाग भग्न है।

39. **नंदी मुख**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 25 X 20X 10 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

यह शिल्पकृति अर्धनारीश्वर प्रतिमा के अधिष्ठान का खंडित विलग भाग है। उल्लेखित नंदी मुख अत्याधिक क्षरित स्थिति में है।

40. **पुरूष प्रतिमा**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 60 X 41 X 15 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

ललितासन में स्थित तथा दायें ओर देहावनत पुरूष प्रतिमा का उर्ध्व भाग अत्यंत कलात्मक है। इस प्रतिमा का उर्ध्वभाग ही अवशिष्ट है तथा भुजायें भग्न है। प्रतिमा के शीर्ष पर बायें ओर विस्तृत केश विन्यास है। उसके बायें कान में चककुंडल है तथा दायें कान का तांटक भग्न है। प्रतिमा के बायें कंधे पर किसी अन्य प्रतिमा का खंडित हाथ अवशिष्ट है जिससे यह ज्ञात होता है कि उसके उपर अथवा दायें ओर एक अन्य प्रतिमा रही है। इस प्रतिमा का मुख किंचित विवर्ण है तथा सिर अवनत है। अतः यह द्वारशाखा पर रूपायित भारवाहक गण प्रतीत होता है।

41. **प्रतिमा अधिष्ठान**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 64 X 35 X 30 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

यह खंडित अवशेष किसी नारी प्रतिमा की अधिष्ठान है। इस शिल्पकृति में उपर की ओर किसी नारी प्रतिमा के त्रिभंग मुद्रानुरूप, खंडित पैर अवशिष्ट हैं। नीचे के भाग में मातंगनक (करि मकर) का अंकन है। यह अत्यन्त भव्य तथा कलात्मक है। उसका मुख खुला हुआ है जिसमें दंतपंक्ति तथा जिह्वा स्पष्ट रूप से दृष्टव्य है। उसके श्रृंग बड़े तथा नुकीले हैं। कान, नेत्र तथा पैर के पंजों के बनावट में मौलिकता दर्शनीय है। संभवतः यह कच्छप का कलात्मक रूप है।

42. **स्तंभ खंड**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 62X 30 X 12 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

इस स्तंभ के उपरी भाग में अर्धविकसित पद्म पुष्प कलिका का अंकन है। इसके नीचे ऐंठी हुई हारावली का गेंडुर (कंठा) है। स्तंभ खंड पर मध्य में हीरक, धतूरा, कुमुदिनी, चतुर्दल पुष्प तथा लघु आकार के पुष्पों की हारावली लता के सदृश्य आरोहित है।

43. **स्तंभ का परत**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 40 X 35 X 4 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

यह किसी बड़े आकार के स्तंभ का विलग परत है। इस शिल्पखंड में विभिन्न आकार–प्रकार की पुष्पीय आकृतियां कमशः उत्तरोत्तर लघु, मध्यम तथा बड़े आकार के दर्पणों के मध्य प्रदर्शित है। यह भग्न स्थापत्य खंड अत्यंत कलात्मक है।

44. **भारवाहक गण**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 68 X 25 X 22 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

यह शिल्पकृति किसी अर्धस्तंभ का भाग है। इस पर सम्मुख भाग में चार भारवाहक गण दृष्टव्य है। सभी गण स्थूल काय है। दायं ओर प्रथम कम में स्थित गण का दायां हाथ कटि पर स्थित है तथा बायां हाथ उपर की ओर उठा हुआ है। उसका मुख अत्यधिक विवर्ण है तथा रूदन करते दृष्टव्य है। शिरोभाग पर अत्यन्त महीन केश विन्यास है। दूसरा गण दोनों हाथ कटि पर रखे है। उसका मुख श्रम से क्लांत है। शीर्ष पर केश की लटें है। तीसरा गण भी कटि पर हाथ रखे हुये है तथा भार वहन के श्रम से क्लांत–मुख है। चौथा गण किशोर वय का है तथा श्रम विमुख स्थिति में परिहासरत है। वह कंधे के पीछे से लिपटे हुये उत्तरीय के छोरको एक हाथ से पकड़े हुए है। उसके शिरोभाग पर मेष श्रृंग केश विन्यास है तथा कानों में चक कुंडल है। मुख पर स्मित हास्य है तथा छद्म श्रम का अभिनय कर रहा है।

45. **द्वार शाखा का भाग**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 85 X 83 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

अत्यधिक खंडित शिल्पखंड जिस पर नारी का बांया हाथ अवशिष्ट है।

46. **द्वारशाखा का भाग**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 85 X 60 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

अत्यधिक खंडित शिल्पखंड जिस पर नारी का पैर अवशिष्ट है। इसके समीप में एक लघुकाय बैठा हुआ गण भी दृष्टव्य है।

47. **खंडित पुरूष प्रतिमा का निचला भाग**

सामग्री – लाल बलुआ प्रस्तर

आकार – 45 X 56 से.मी.

काल – 6–7 वीं सदी ई.

इस खंडित प्रतिमा का मात्र चरण अवशिष्ट है। संभवतः यह किसी स्थूल काय गण प्रतिमा का अंग है जो द्वारपाल के रूप में प्रतिष्ठापित रहा होगा।

48. **बाण शीर्ष**

सामग्री – लौह सामग्री

आकार – 10 X 1.5 से.मी.

काल – 17–18 वीं सदी ई.

लौह निर्मित बाण शीर्ष। अंशत क्षरित है।

49. **महारानी विक्टोरिया का सिक्का**

सामग्री – चांदी

भार – लगभग 11–12 ग्राम

महारानी विक्टोरिया का वर्ष 1874 का चांदी का एक रूपए का सिक्का।

❑

अध्याय 5
निष्कर्ष

सिसदेवरी का प्राचीन टीला ईट तथा प्रस्तर निर्मित मंदिर संरचना के रूप में अनावृत हुआ है। इस टीले से प्राप्त प्रतिमाओं के आधार पर इसे शिव मंदिर माना जा सकता है। उत्खनन से इस मंदिर का अत्यधिक क्षत–विक्षत तल विन्यास प्राप्त हुआ है जिसके आधार पर संरचना के अंग में मंडप, सोपान, अंतराल तथा सोपान से संयुक्त गर्भगृह रहा है। अब संरचना में गर्भगृह प्रत्यक्ष रूप से दृष्टव्य नहीं है। वास्तु कला की दृष्टि से इस मंदिर की योजना विशिष्ट प्रकार की है। दक्षिण कोसल में बिलासपुर जिले के देवरानी जेठानी मंदिर में सर्वप्रथम सर्वथा नवीन एवं विलक्षण प्रकार के वास्तु कला का प्रयोग देखने मिलता है। देवरानी–जेठानी मंदिर बिलासपुर के पश्चात् इस स्थल के उत्खनन से पूर्व मल्हार स्थित देउर मंदिर को ताला के परवर्ती अनुक्रम में सम्मिलित किया जाता था। सिसदेवरी के उत्खनन से अब यह स्वीकार किया जा सकता है कि देवरानी जेठानी मंदिर बिलासपुर के पश्चात् दक्षिण कोसल में स्थापत्य कला की अगली श्रृंखला सिसदेवरी का मंदिर रहा है।

कला शैली की दृष्टि से सिसदेवरी से प्राप्त कलाकृतियों में देवरानी जेठानी मंदिर के कला शैली से समानता तथा तद्रूप विकास दिखाई पड़ता है। यहां के उत्खनन से प्राप्त अर्धनारीश्वर की भग्न प्रतिमा, स्तंभ अलंकरण तथा प्रतिमा अधिष्ठान में रूपायित मकर, ताला के कलाशैली से प्रभावित है। इसी प्रकार देवरानी जेठानी मंदिर ताला के सदृश्य स्थापत्य खंडों एवं मूर्तियों के निर्माण के लिये यहां भी कम कठोर, परतदार लाल बलुआ प्रस्तर का उपयोग किया गया है। जेठानी मंदिर के सदृश्य इस मंदिर के तल विन्यास में आंशिक समानता दिखाई पड़ती है। विशेषकर सोपान संयुक्त गर्भगृह की योजना तथा प्रवेश द्वार पर नदी देवी के साथ द्वारशाखा अलंकरण योजना। इसी प्रकार से देवरानी जेठानी मंदिर ताला तथा सिसदेवरी में उत्खनित संरचना में ईट तथा प्रस्तर का उपयोग साथ साथ किया गया है। जेठानी मंदिर के सदृश्य इस मंदिर से शिवलिंग तथा नंदी भी नही मिले हैं। इस मंदिर की उर्ध्व संरचना पूर्णतः विनष्ट है।

सिसदेवरी के मंदिर के स्थापत्य विलक्षणता में मंडप, अंतराल तथा गर्भगृह का निर्धारण अत्यंत जटिल है। पूर्व में इस टीले को ग्रामवासियों के द्वारा खोद कर अत्याधिक क्षत विक्षत कर दिये जाने के कारण तल विन्यास के साथ ही साथ उर्ध्व विन्यास नष्ट प्रायः है। यह भी अत्यन्त आश्चर्य जनक है कि इस टीले के उत्खनन से एक भी लघु पुरावशेष – मृदभांड, मनके, प्रतिमा फलक, मृत्पात्र, प्राचीन सिक्के नही मिल सके हैं।

सिसदेवरी से प्राप्त खंडित प्रतिमायें क्षरित स्थित में होते हुये भी अत्यन्त कलात्मक है। इन अवशेषों में अत्यन्त सूक्ष्म कलात्मक अलंकरण के साथ साथ सहज लावण्य, तीव्र भावाभिव्यक्ति तथा मौलिक कल्पना शीलता प्रस्फुटित है। कलाशैली की दृष्टि से सिसदेवरी के मंदिर का निर्माण काल छठवी शताब्दि ईसवी का उत्तरार्द्ध (550 से 600 ईसवी) के मध्य अनुमानित है।

सिसदेवरी के उत्खनन से ज्ञात संरचना दक्षिण कोसल के प्रारंभिक स्थापत्य कला की निरंतरता को क्रमबद्ध करने में एक सहायक आधार सिद्ध हुआ है। छत्तीसगढ़ के स्थापत्य कला में प्रथम उदाहरण के रूप में देवरानी जेठानी मंदिर के पश्चात् सिसदेवरी का स्थान सिद्ध होता है। इसके पश्चात् मल्हार स्थित देउर मंदिर का क्रम स्थापित किया जा सकता है। अभिलेखीय जानकारी के अभाव में कलाशैली के आधार पर सिसदेवरी का निर्माण काल शरभपुरीय राजाओं के राजत्वकाल के समय मान्य किया जाना समुचित है। उपरोक्त दृष्टि से सिसदेवरी का उत्खनन दक्षिण कोसल के कला इतिहास का एक महत्वपूर्ण पूरक अध्याय है।

सिसदेवरी का यह मंदिर किन्हीं अज्ञात कारणों से नष्ट होने के पश्चात् टीले में परिवर्तित हो गया था। इसके पश्चात् ग्रामवासियों के द्वारा इस स्थल से उत्खनित संरचना एवं अन्य कलाकृतियों के कई बार खोदे जाने के कारण एवं इस स्थल पर उगे हुये जंगली वृक्षों के परिणामस्वरूप संरचना अत्यधिक क्षत विक्षत और नष्ट होती रही है। पूर्व में इस स्थल की जानकारी नहीं होने से ग्रामवासियों के द्वारा टीले के अत्यन्त सन्निकट से अतिक्रमण कर इसके अवशेष सहित आकार–प्रकार को भी क्षतिग्रस्त तथा नष्ट कर दिया गया है। उत्खनन के पश्चात् इस स्थल से उत्खनित संरचना एवं अन्य कलाकृतियों के अनुरक्षण संरक्षण पर ध्यान देते हुये सुरक्षा की कार्यवाही की जा रही है।

❑

परिशिष्ट

❖ अन्य समीपस्थ स्थित स्थलों का सर्वेक्षण/अन्वेषण

सिसदेवरी के उत्खनन कार्य के दौरान अन्य समीपस्थ स्थलों का सर्वेक्षण भी किया गया है। ऐसे स्थलों में पलारी, गिधपुरी, सिरपुर, रोहांसी तथा तेलासी अवशेषों के दृष्टि से महत्वपूर्ण है। उल्लेखित स्थल सिसदेवरी से लगभग 20 कि.मी. की परिधि में स्थित है। भू–रचना के आधार पर उक्त सभी स्थल मैदानी भू–भाग है तथा स्मारक व स्थल विभिन्न काल के प्रतीत होते है। सिसदेवरी से उल्लेखित स्थलों की दिशा तथा दूरी निम्नलिखित है।

क.	स्थल का नाम	दिशा	दूरी	विवरण
1.	सिरपुर	दक्षिण	22 कि.मी.	सोमवंशी कला शैली का प्रमुख स्थल
2.	पलारी	उत्तर	12 कि.मी.	सोमवंशी कला शैली का ईट निर्मित मंदिर।
3.	गिधपुरी	दक्षिण	14 कि.मी.	सातवीं सदी ईसवी के भग्न मंदिर के अवशेष
4.	रोहांसी	उत्तरपूर्व	20 कि.मी.	प्राकार तथा परिखा युक्त मिट्टी का गढ़
5.	तेलासी	दक्षिण	14 कि.मी.	प्राकार तथा परिखा युक्त मिट्टी का गढ़

सिरपुर महानदी के दक्षिणी तट पर स्थित है। गिधपुरी तथा सिरपुर के मध्य महानदी प्रवाहित है। सोमवंशी शासकों के काल (लगभग 7वीं सदी ईसवी) में सिरपुर शैव, वैष्णव तथा बौद्ध धर्म का विख्यात केन्द्र था। दक्षिण कोसल की राजधानी होने के कारण सिरपुर में अनेक भव्य देवालय तथा बौद्ध बिहारों का निर्माण हुआ। इन अवशेषों में लक्ष्मण मंदिर कलात्मकता, भव्यता तथा विशालता की दृष्टि से हमारे देश के ईंटों से निर्मित प्राचीन मंदिरों में सर्वोत्कृष्ट है। गिधपुरी तथा सिरपुर के मध्य महानदी में पुल नहीं होने से यह मार्ग पदयात्रा की दृष्टि से उपयुक्त है। वाहन से नदी किनारे चिखली ग्राम तक पहुंच सकते है। यहां नदी के दूसरे तट पर सिरपुर स्थित है।

पलारी का शिवमंदिर लगभग सातवी सदी ईसवी के अंतिम चरण तथा आठवीं सदी के पूर्वार्द्ध में निर्मित है। यह मंदिर भी ईंटों से निर्मित है। इस मंदिर की द्वारशाखा अत्यधिक कलात्मक है। इसके प्रवेश द्वार में शिव, शिव विवाह, अष्ट दिकपाल, तथा नदी

देवियो का संयोजन मौलिकता तथा कलात्मक की दृष्टि से भारतीय कला में अद्वितीय है तथा दक्षिण कोसल में ज्ञात अद्वितीय उदाहरण है। इस मंदिर की निम्नलिखित विशेषताएं हैं :–

1. मदिर का तल विन्यास ताराकृति तल योजना पर आधारित है।
2. सिरदल के प्रवेश द्वार पर शिवविवाह का अंकन है।
3. सिरदल के नीचे की पट्टिका पर मातृकायें प्रदर्शित हैं।
4. द्वार शाखा पर दोनों पार्श्वो में नदी देवियों का युग्म प्रदर्शित है। यह मौलिकता स्थानीय नदी देवियों को महत्व देने के कारण संभावित है। पलारी के अतिरिक्त दक्षिण कोसल के प्राचीन मंदिरों में नदी देवियां एकाकी प्रदर्शित है।
5. केशाभरण, श्रृंगार परिधान तथा भाव–भंगिमा विशेष रूप से कलात्मक है।
6. द्वार शाखा पर क्षैतिजीय क्रम में (प्रवेश द्वार पर दोनों ओर) दायें ओर चार तथा बायें ओर चार दिकपाल प्रदर्शित है। दायें द्वार शाखा पर कुबेर, वायु, वरूण तथा यम क्रमशः प्रदर्शित है। बायें द्वार शाखा पर इन्द्र, अग्नि, ईशान, तथा निऋति का अंकन है। कुबेर, हंस जुते पुष्पक विमान पर आरूढ़ है तथा निऋति के वाहन में गिद्ध प्रदर्शित हैं। यम विशालकाय भैंसे पर आरूढ़ हैं तथा दोनों हाथों से उसके सींग को पकड़े हुये हैं।
7. दिकपालों के शास्त्रीय रूपों का ऐसा मनोरम, विशद तथा व्यंजनात्मक अंकन भारतीय कला में मौलिक कल्पना की दृष्टि से अद्वितीय है तथा पलारी के शिव मंदिर में दिकपालों की संयोजना विशिष्ट परिकल्पना है। इस मंदिर का मंडप पूर्णतः भग्न तथा पुनर्संरचित है। मंदिर परिसर में विलग स्तंभ खंड तथा एक पैर पर खड़ी पंचाग्नि तपस्यारत गौरी की कलात्मक भग्न प्रतिमा रखी है।

गिधपुरी – गिधपुरी में सोमवंशी कलाशैली का भग्न स्मारक टीले के रूप में विद्यमान है। इस मंदिर का अधिष्ठान कहीं–कहीं पर ग्रामवासियों के द्वारा अनावृत कर दिया गया है। आकार की दृष्टि से यह बहुत बड़ा टीला है। टीले के उपर शिवलिंग तथा द्वारशाखा का खंडित भाग रखा हुआ है। यह स्थल उत्खनन योग्य है।

गिधपुरी ग्राम से कुछ दूरी पर महानदी के धारा प्रवाह से कट कर बने नाले के समीप एक नवीन मंदिर निर्मित है। इस मंदिर को ग्रामवासी डोंगरदेवी मंदिर कहते है। इस मंदिर में आसनस्थ नागराज की एक अत्यन्त कलात्मक प्रतिमा पूजित स्थिति में रखी हुई है। नागराज की इस प्रकार की अन्य प्रतिमा लक्ष्मण मंदिर सिरपुर तथा आरंग में (खंडित प्रतिमा) चिन्हांकित है। डोंगरदेवी के इस मंदिर

मे नदी देवियों की प्रतिमायें भी रखी है। ये प्रतिमायें संभवतः सिरपुर अथवा गिधपुरी के अवशेषों से संग्रहित की गई होंगी।

रोहांसी – यहां मिट्ठी के प्राकार तथा परिखा से निर्मित विशाल आकार का मृदा दुर्ग विद्यमान है इस दुर्ग के चतुर्दिक आवासीय निर्माण कर लिया गया है।

तेलासी – यहां मिट्ठी के प्राकार तथा परिखा युक्त मृदा दुर्ग का अवशेष विद्यमान है। दुर्ग की परिखा कृषि भूमि में परिवर्तित हो चुकी है। आकार की दृष्टि से यह रोहांसी से छोटा है।

❑

F.No. 1/19/2001-EE
Government of India
Archaeological Survey of India
Janpath, New Delhi-110011
Dated: 28/1/02

2

To,

The Director Archaeology,
Tourism and Culture
Govt. of Chattishgarh,
CHATTISHGARH, Raipur.

Sub: Exploration/Excavation programme for the season 2001-2002

Reference: No. 216/ Excav./2001, dated 21.4.2001

On the recommendation of the Standing Committee, approval of the Central Government under Rule 25 of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Rules 1959 is hereby conveyed for carrying out Exploration/Excavation work mentioned below during the season 2001-2002

Name of the Site : Excavation at Sisdevari, District Raipur, Chhatishgarh.

Name of the Director(s) : Shri G.L. Raikawar, Archaeologist, Co-director Shri Rahul Kumar Singh, Bilaspur Museum.

The approval is further subject to the provisions of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958 and Rules 1959 framed thereto.

The approval is valid upto the season ending 30.9.2002 subject to no objection from the concerned State Government.

The exploration/excavation may be taken up under intimation to this office.

22 JUN 2002
Director, Culture

Yours faithfully,

(R.S.Bisht)
Director(Exploration & Excavation)

Copy forwarded for information and necessary action to:-

1. Chief Secretary, Environment, Forest, Tourism and Culture Ministry, Chattishgarh State, Raipur.
2. The Supt'dg. Archaeologist, ASI, Bhopal Circle, Bhopal.
3. File No. 1/1/2001-EE
4. Guard file.

(R.S.Bisht)
Director(Exploration&Excavation)

रेखाचित्र

चित्रफलक

रेखाचित्र

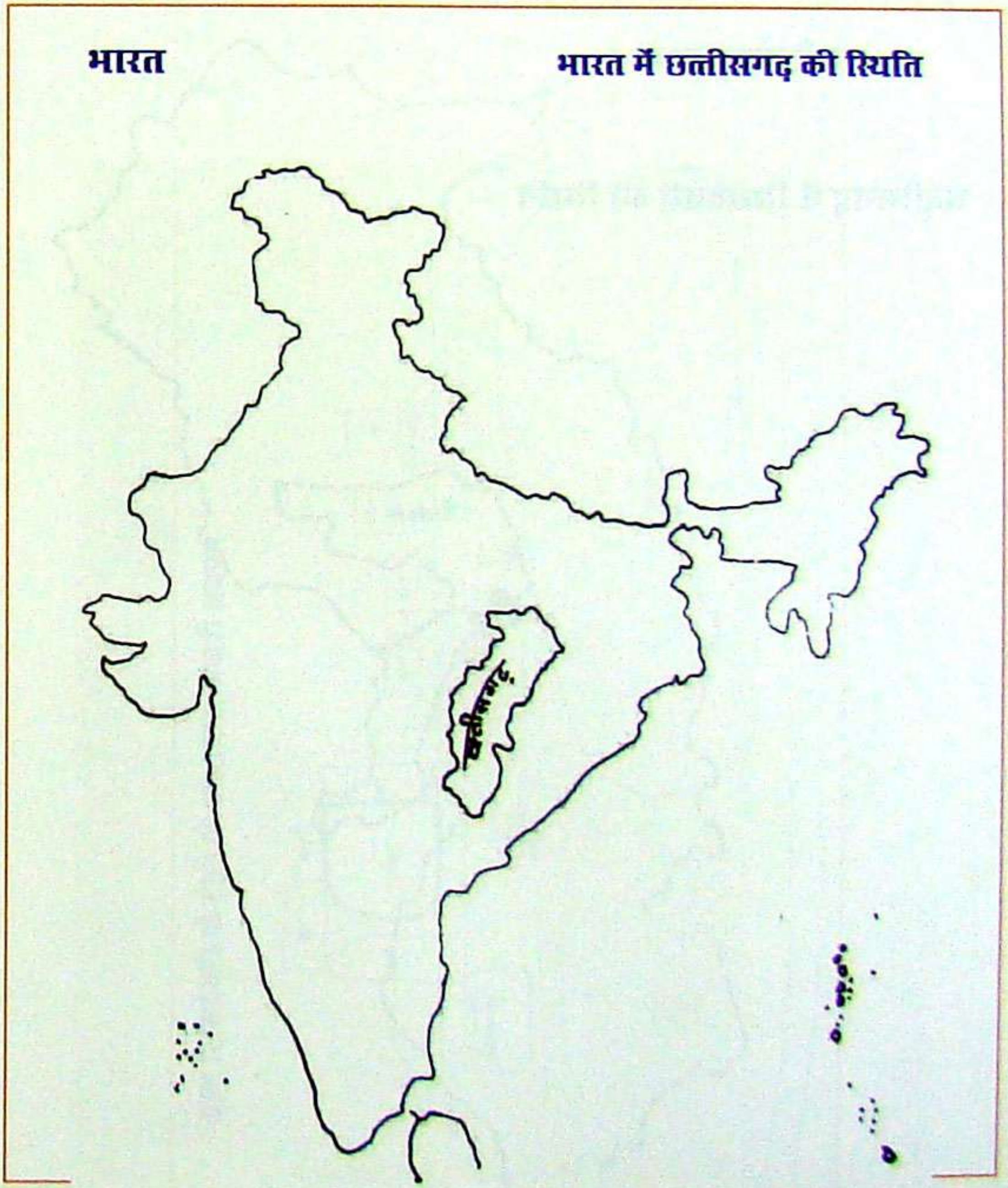

छत्तीसगढ़ राज्य

छत्तीसगढ़ में सिसदेवरी की स्थिति

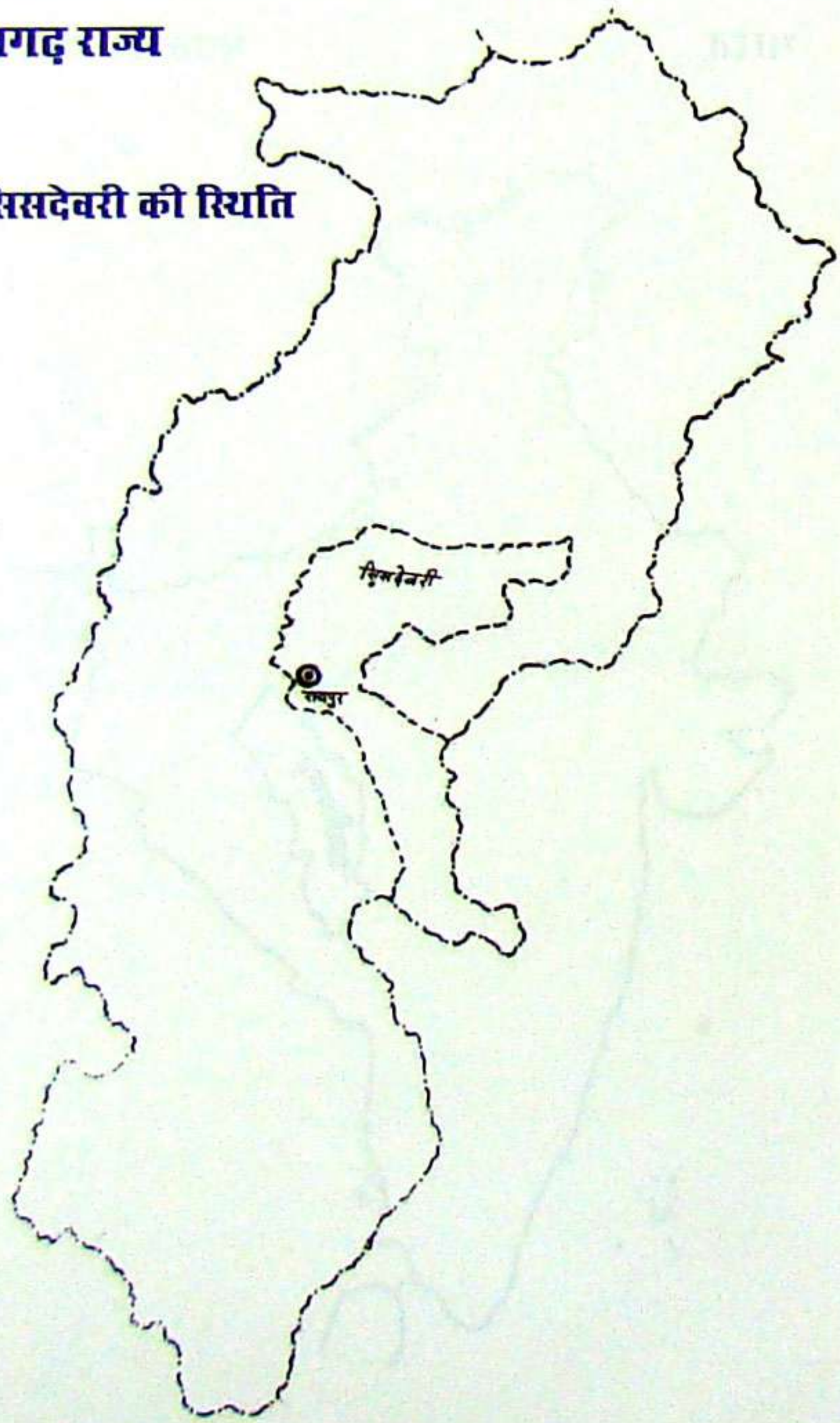

ग्राम सिसदेवरी के टीले के आसपास नजरी नक्सा

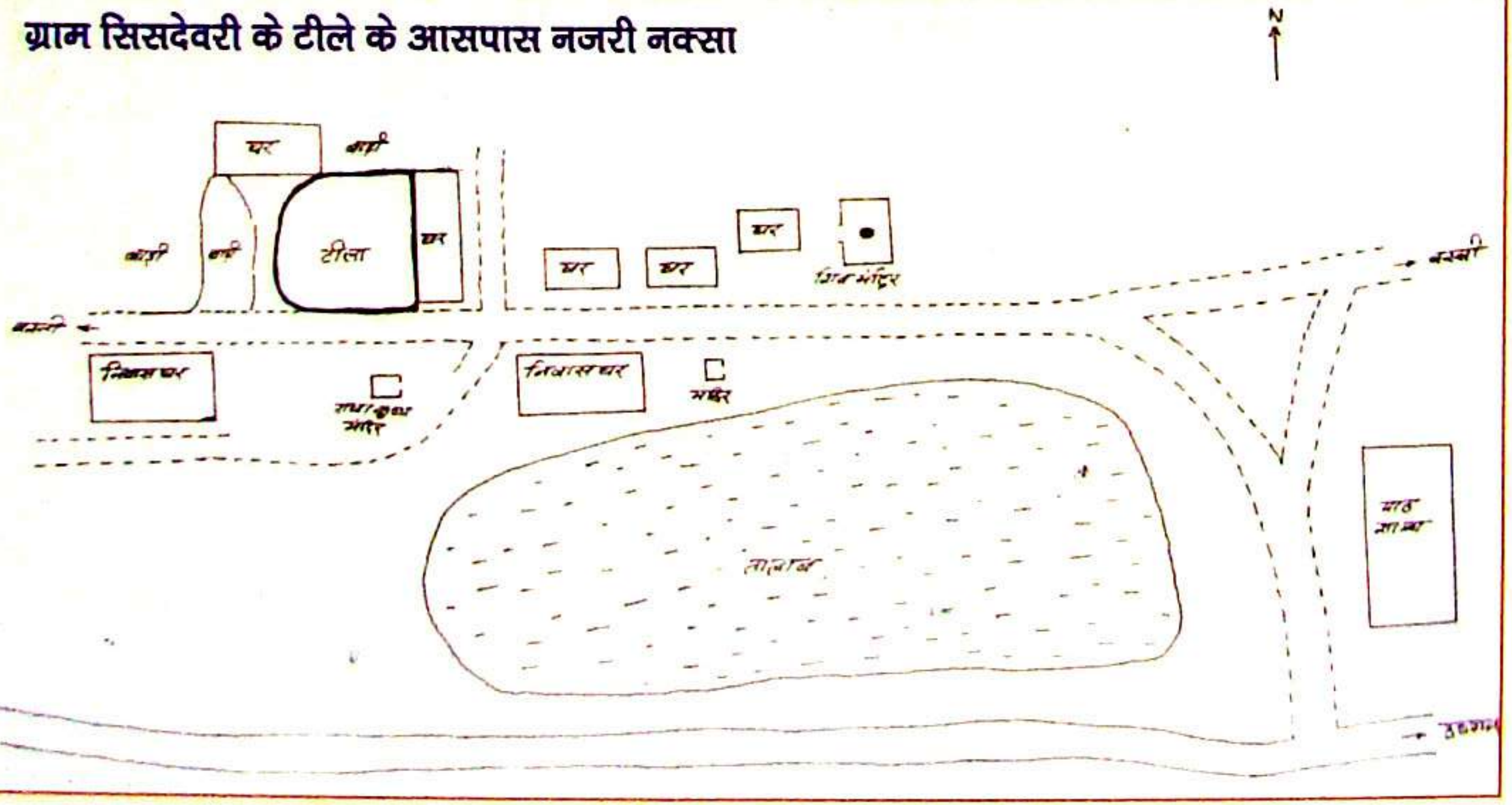

प्राचीन स्मारक स्थल ग्राम सिसदेवरी का टीला उत्खनन पूर्व

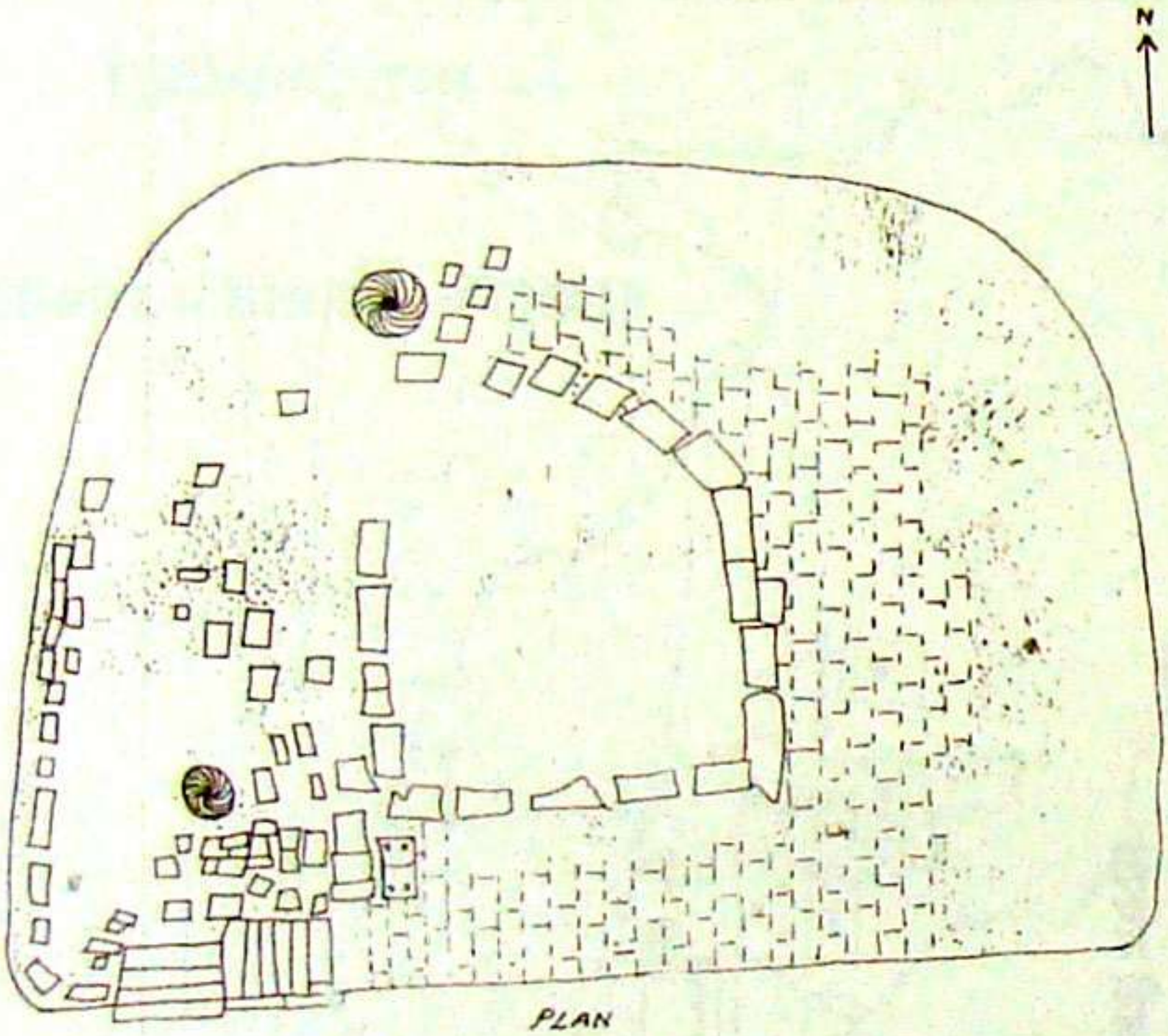

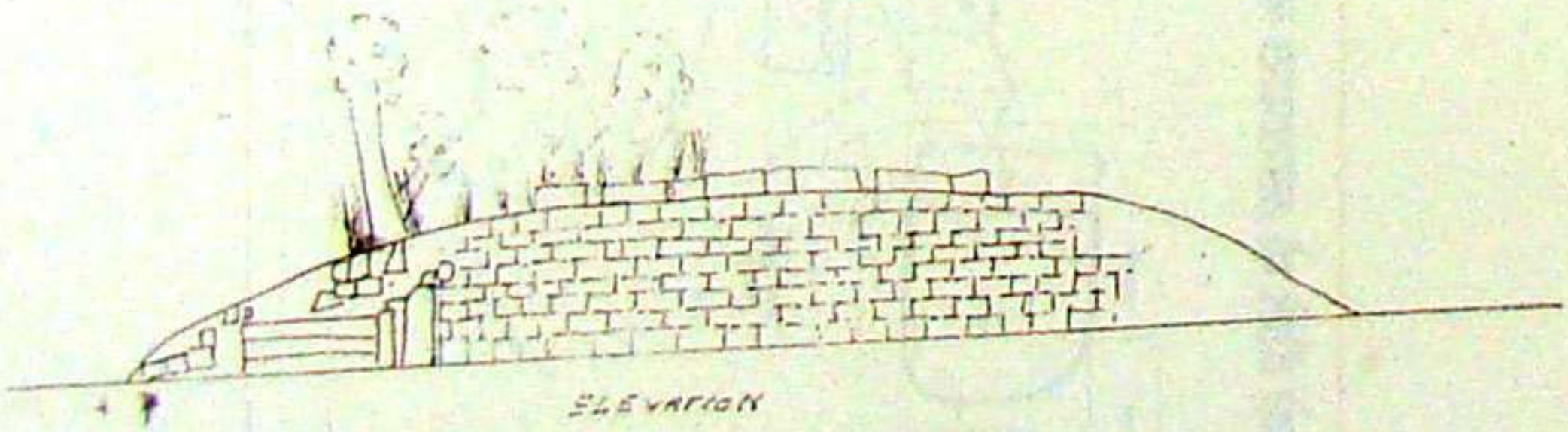

तल योजना प्राचीन स्मारक स्थल ग्राम सिसदेवरी

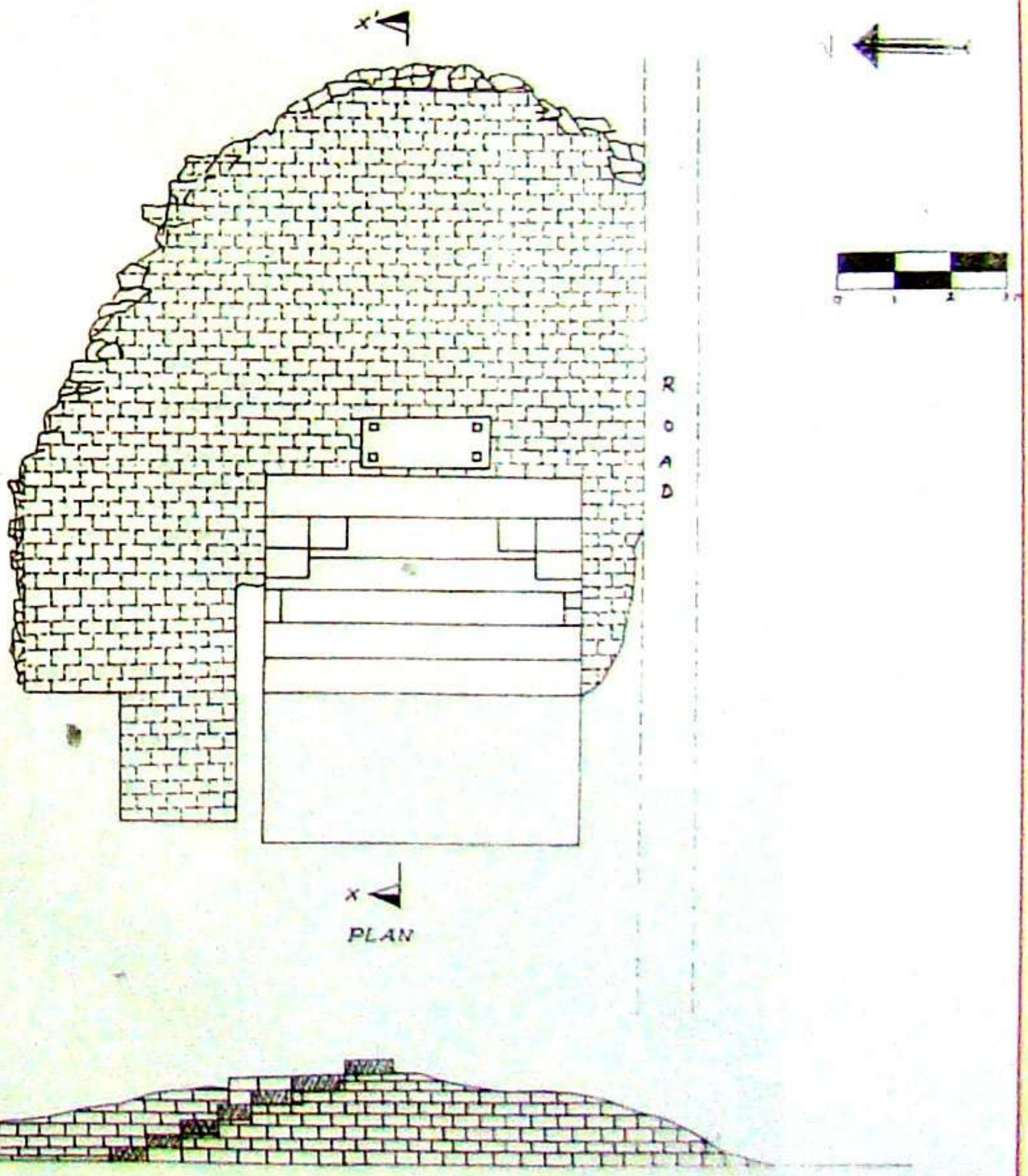

ग्राम सिसदेवरी के समीपवर्ती पुरातत्वीय स्थल

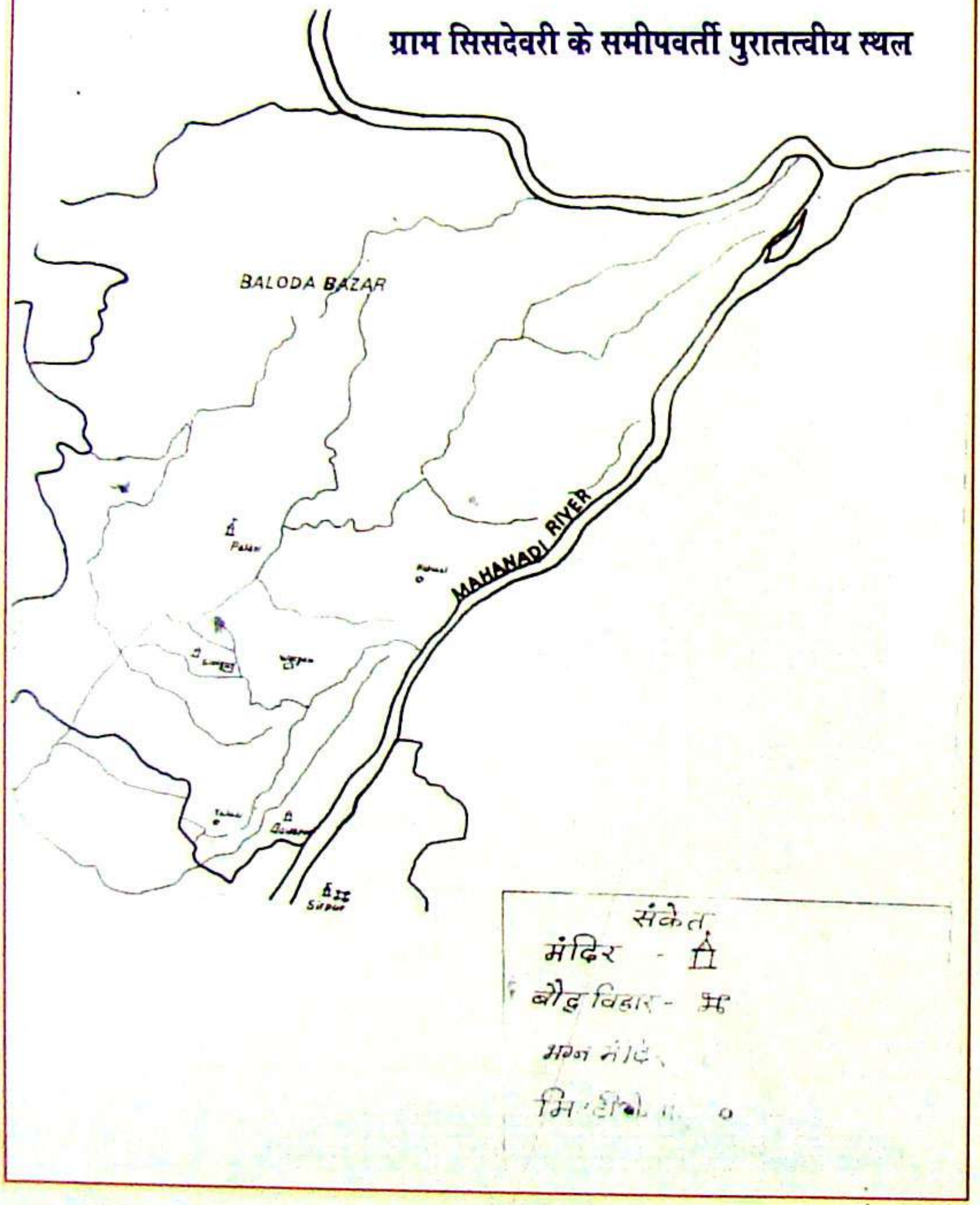

छायाचित्र

उत्खनन कार्य एवं पश्चात् के छायाचित्रों की सूची

फलक - 1

उत्खनन पूर्व

चित्र 1 - सिसदेवरी का प्राचीन टीला दक्षिण भाग

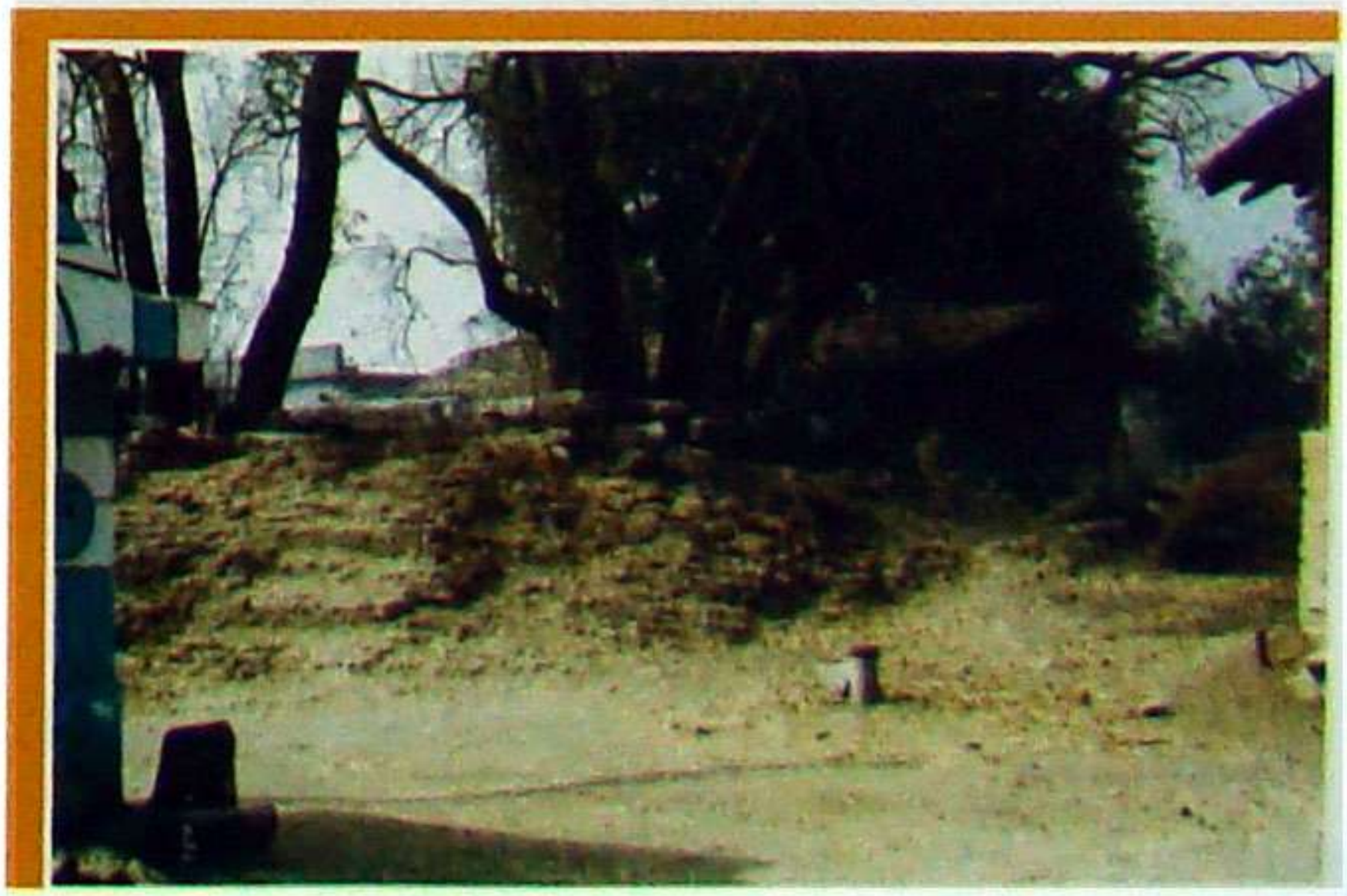

चित्र 2 - सिसदेवरी का प्राचीन टीला दक्षिण-पूर्व भाग

फलक - 2
उत्खनन पूर्व

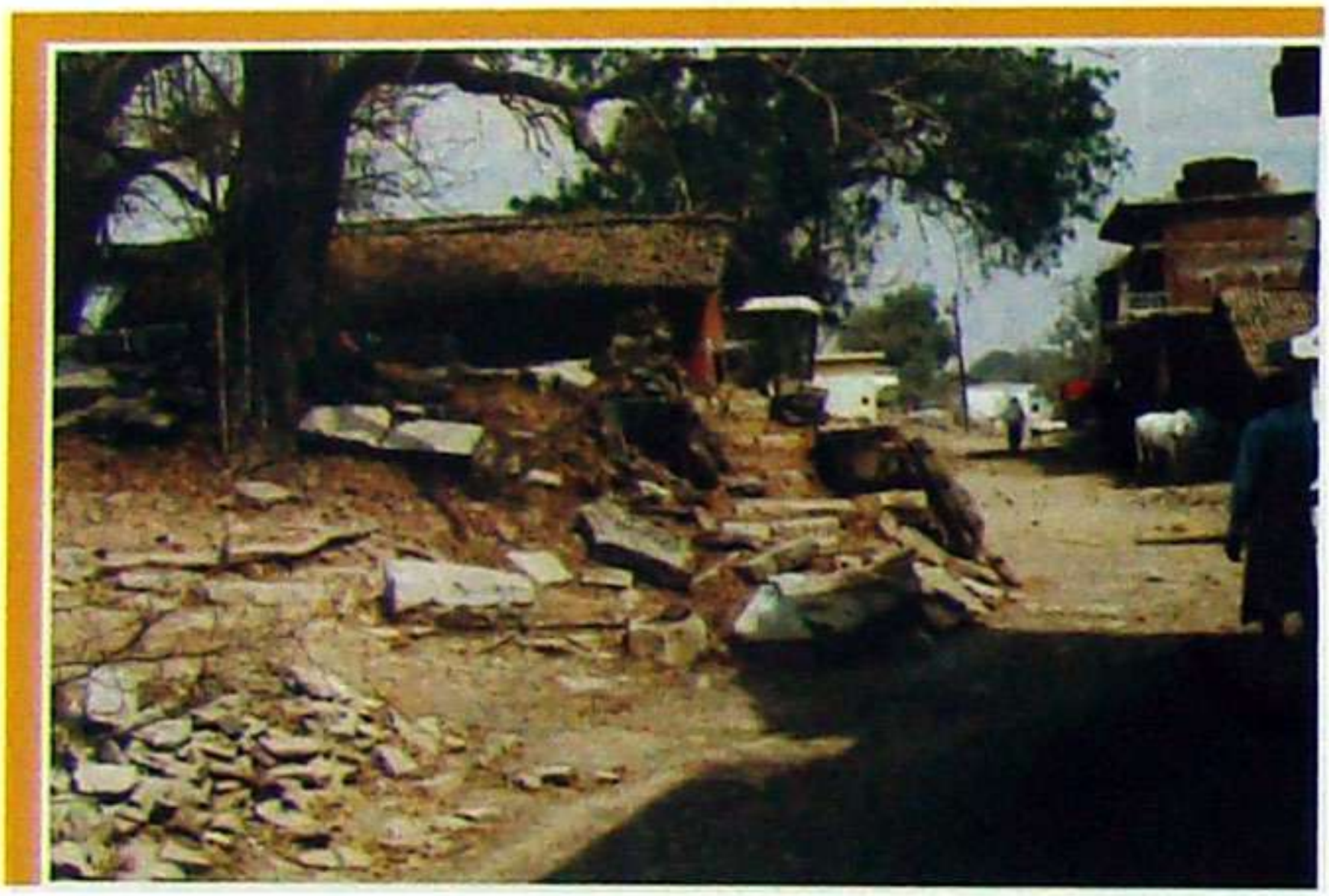

चित्र 3 – सिसदेवरी का प्राचीन टीला पश्चिम-दक्षिण भाग

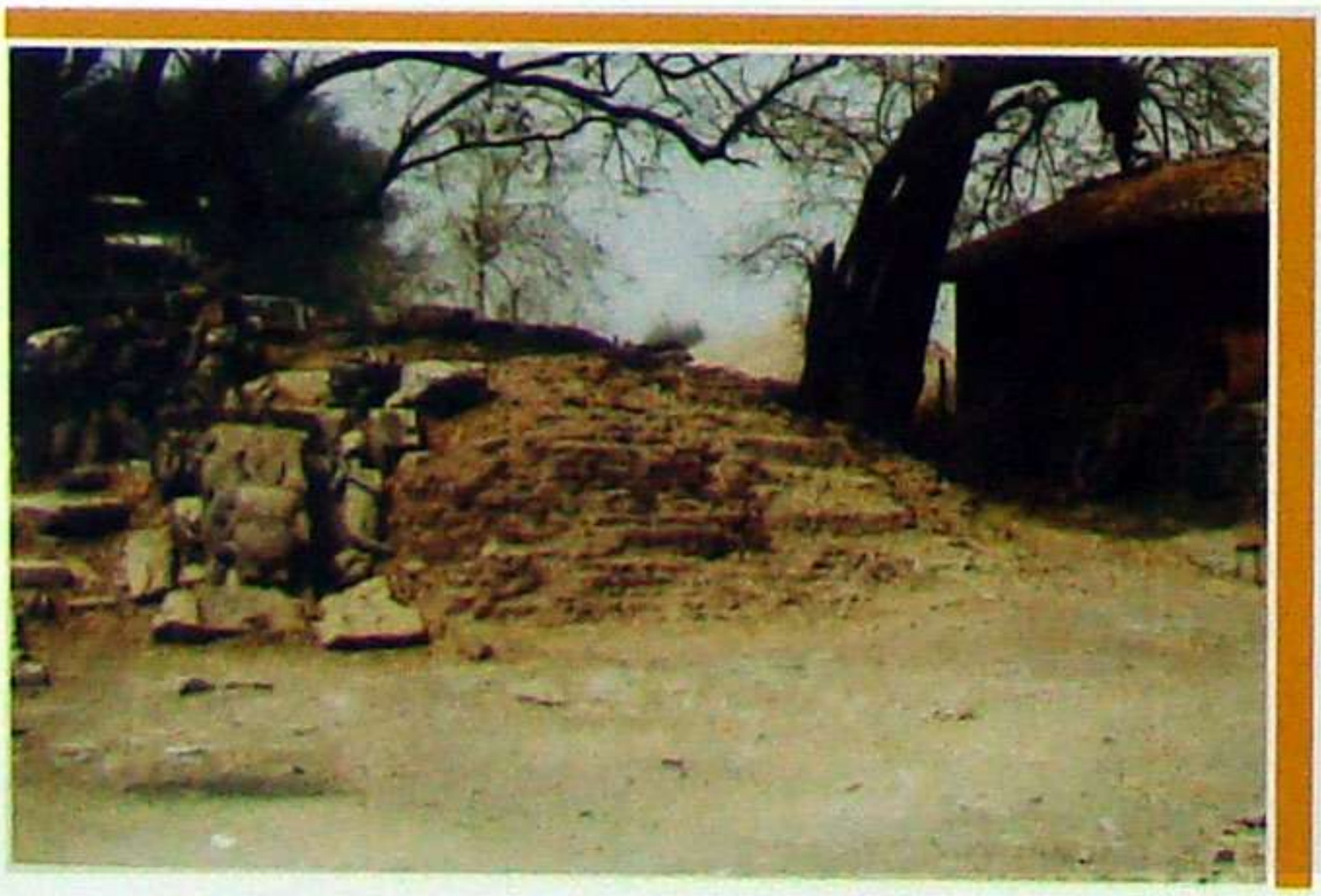

चित्र 4 – सिसदेवरी का प्राचीन टीला पश्चिमी-पूर्वी भाग

फलक - 3
उत्खनन पूर्व

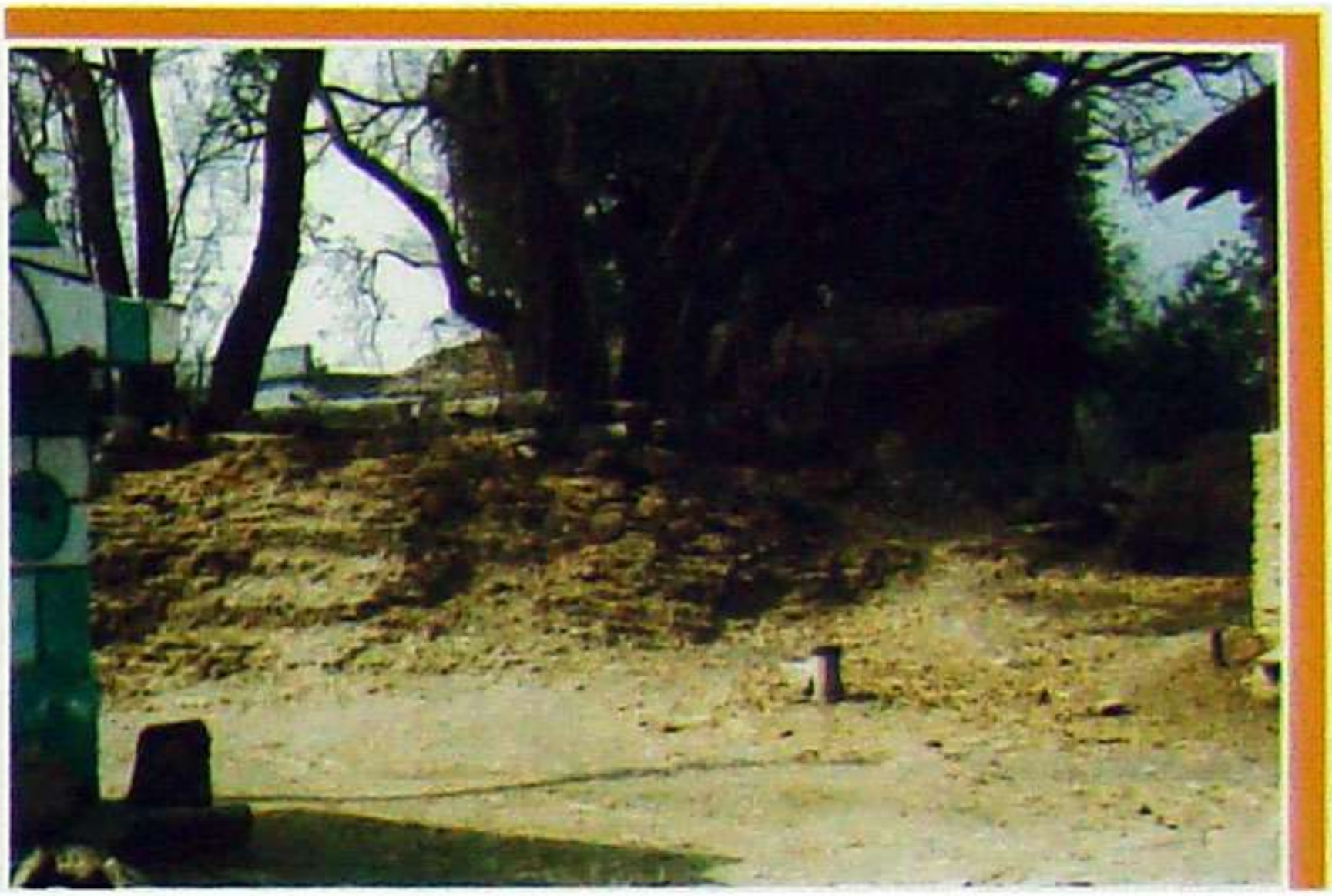

चित्र 5 – सिसदेवरी का प्राचीन टीला दक्षिण-पूर्वी भाग

चित्र 6 – सिसदेवरी का प्राचीन टीला पश्चिमी-पूर्वी भाग

फलक - 4
उत्खनन पूर्व

चित्र 7 – सिसदेवरी का प्राचीन टीला पश्चिमी भाग

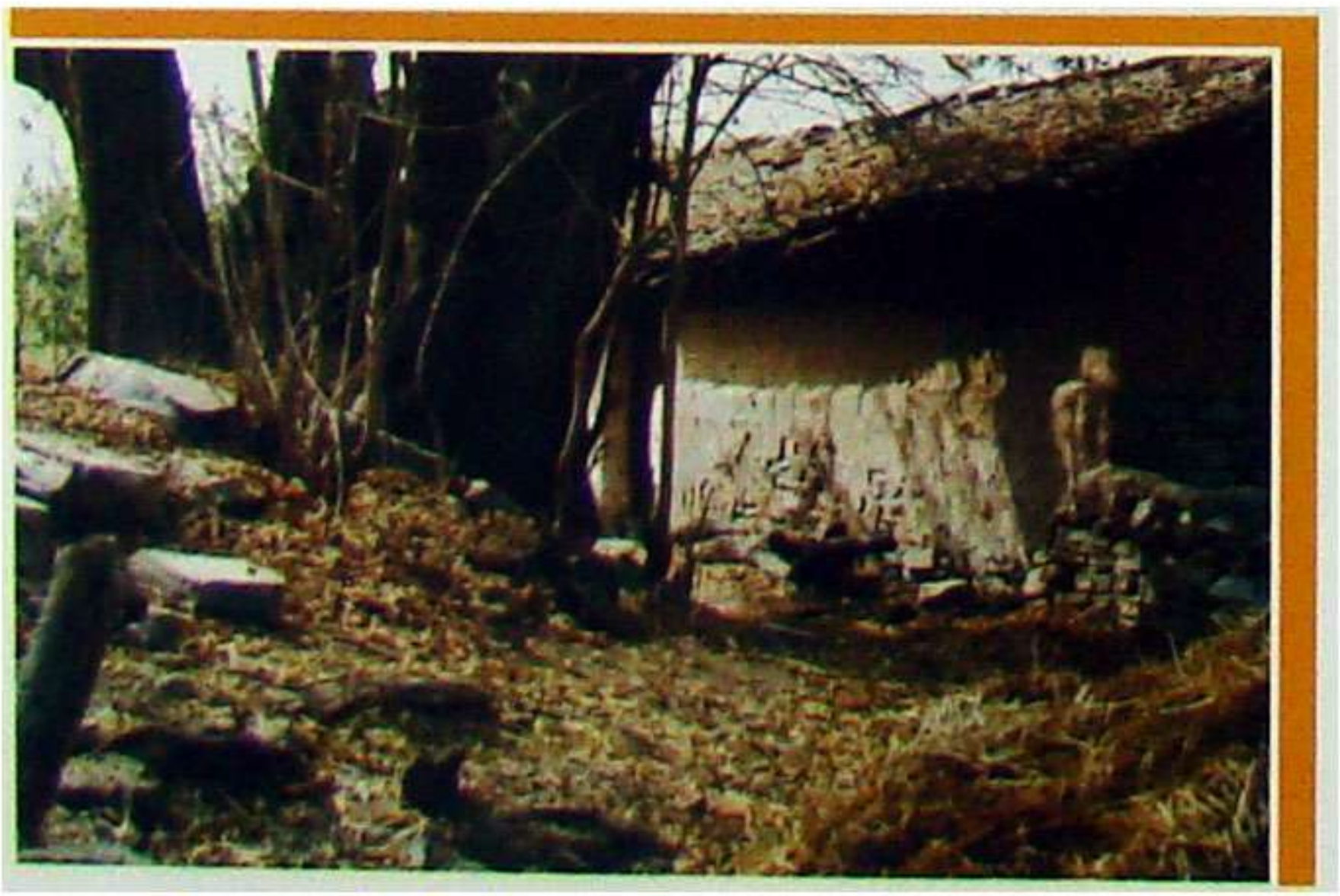

चित्र 8 – सिसदेवरी का प्राचीन टीला पूर्वी-उत्तरी कोना

फलक - 5
उत्खनन पूर्व

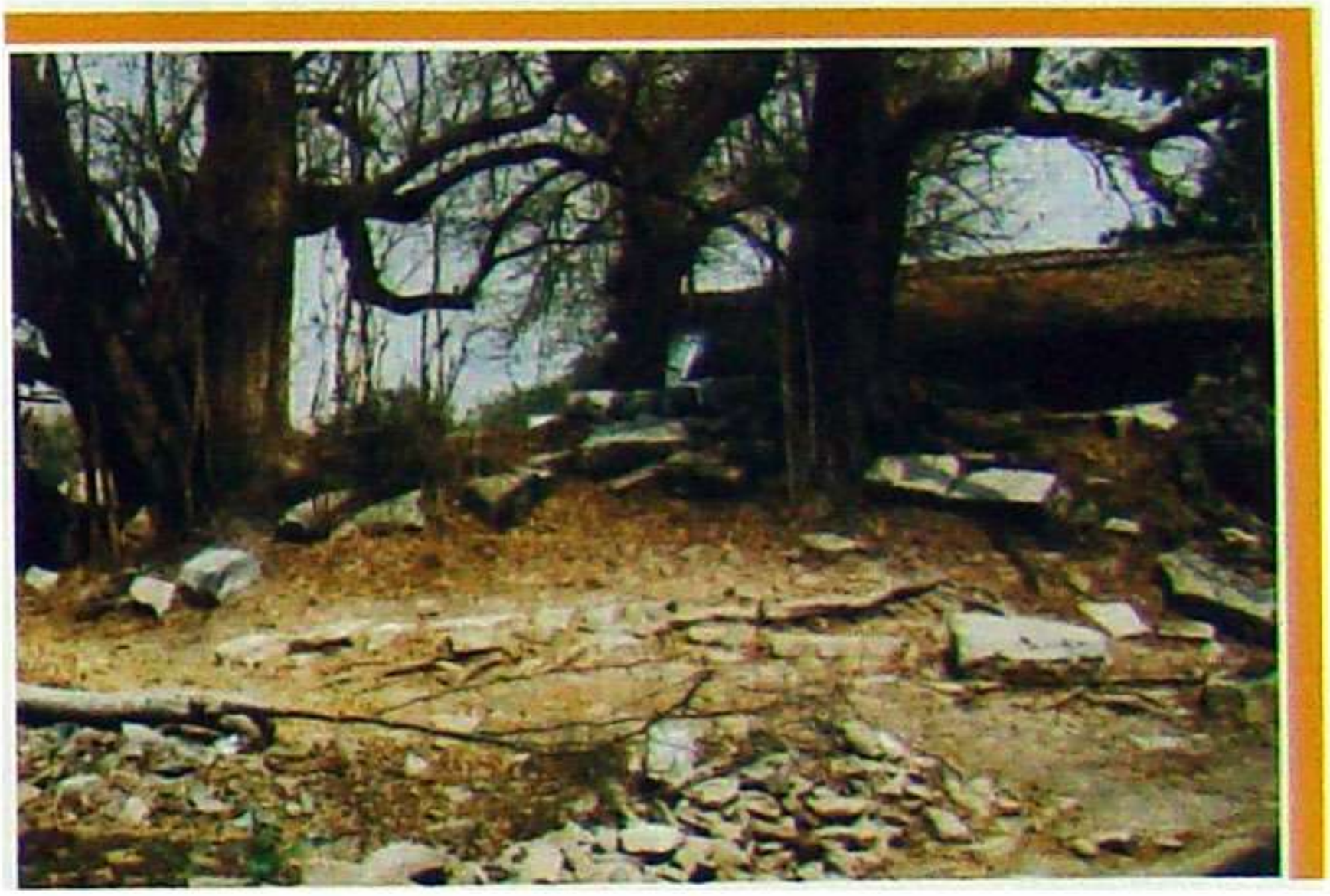

चित्र 9 – सिसदेवरी का प्राचीन टीला पश्चिमी भाग

चित्र 10 – सिसदेवरी का प्राचीन टीला पश्चिमी-उत्तर भाग

फलक - 1

उत्खनन पश्चात्

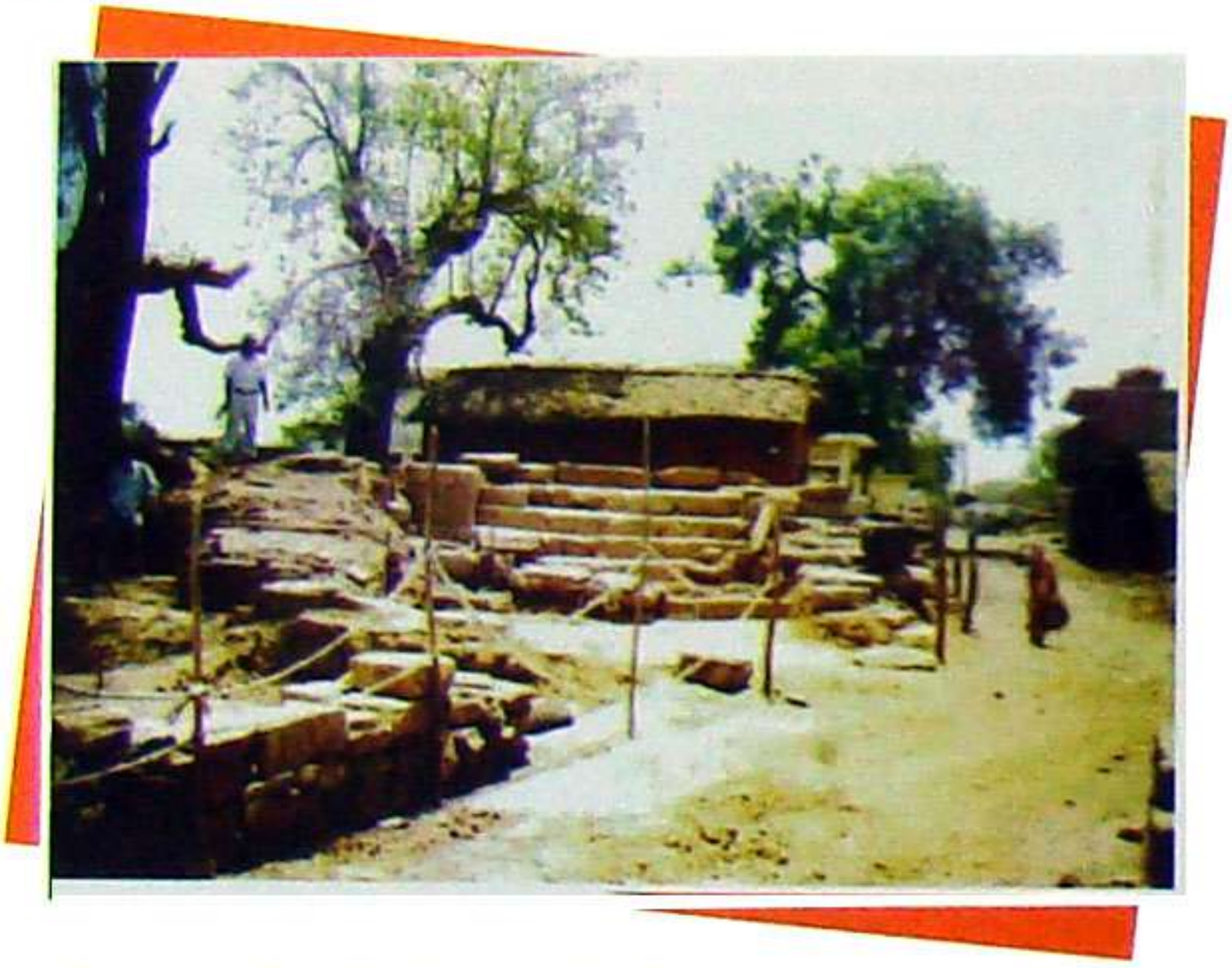

चित्र 1 – सिसदेवरी का प्राचीन टीला सम्मुख भाग (पश्चिम)

चित्र 2 – सिसदेवरी का प्राचीन टीला सम्मुख भाग (पश्चिम)

फलक -2
उत्खनन पश्चात्

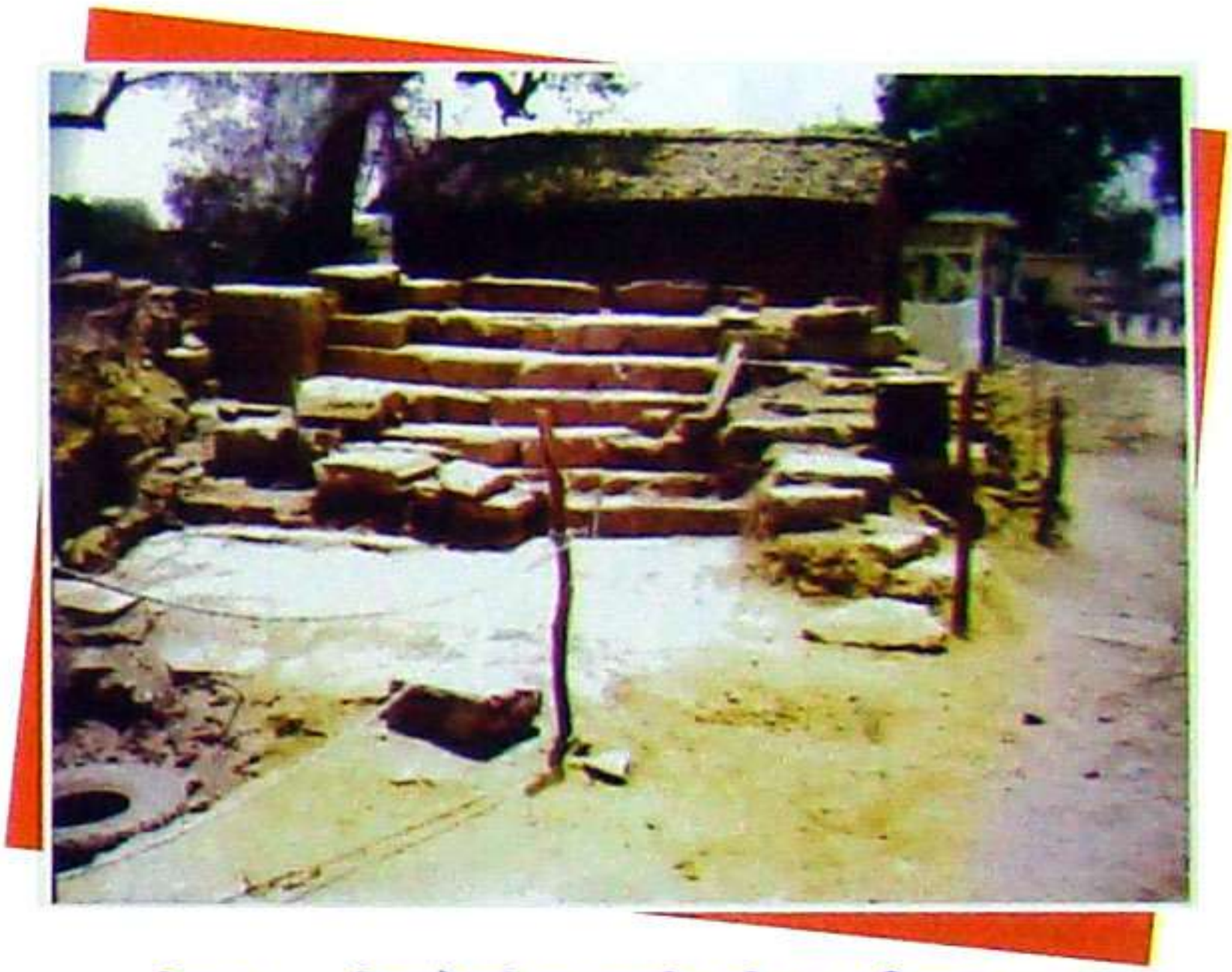

चित्र 3 – सिसदेवरी का प्राचीन टीला (पश्चिम दृश्य)

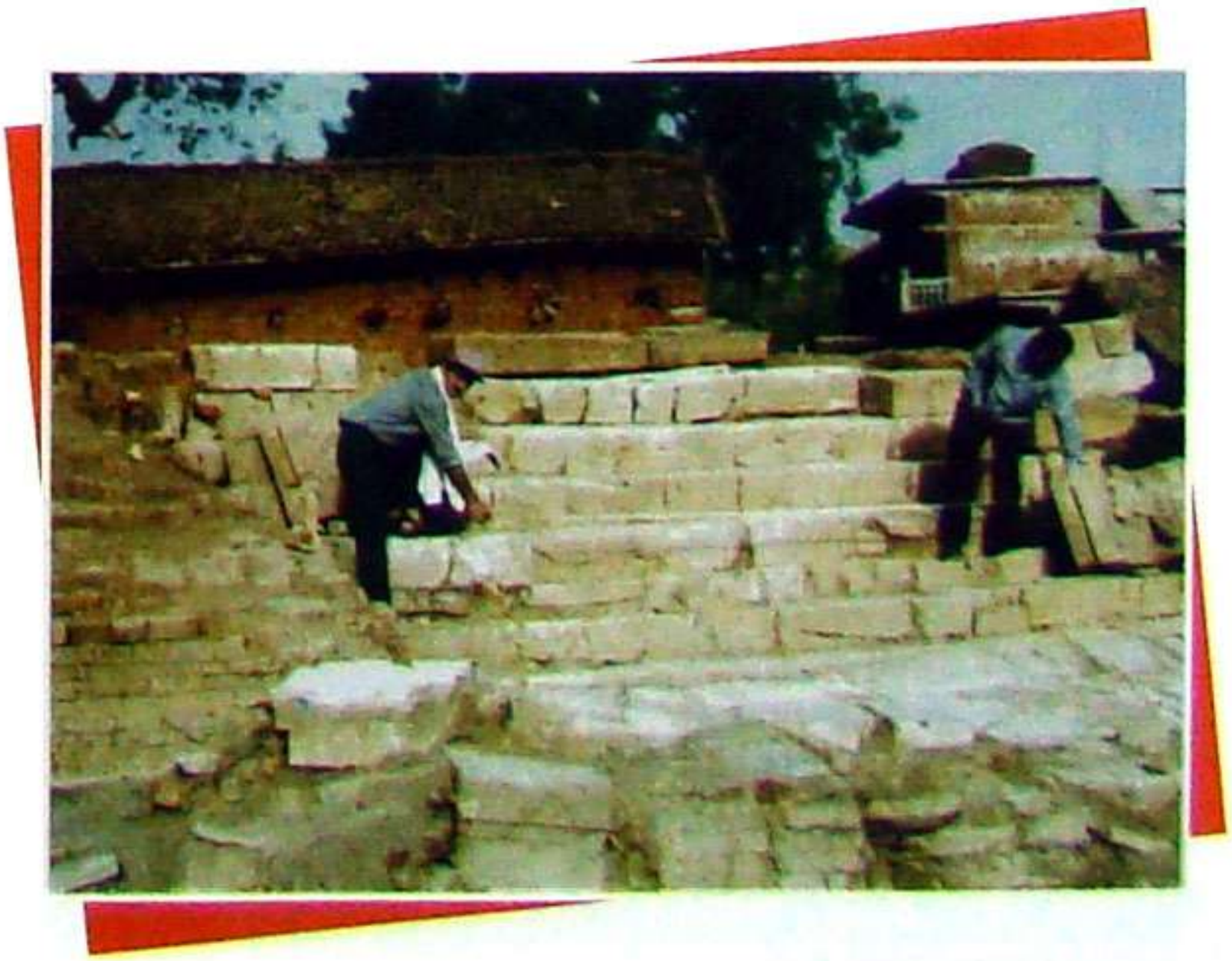

चित्र 4 – सिसदेवरी का प्राचीन टीला सम्मुख भाग (सोपान संरचना)

फलक - 3

उत्खनन पश्चात्

चित्र 5 – सिसदेवरी का प्राचीन टीला (मंडप तथा सोपान का दक्षिणी दिशा का दृश्य)

चित्र 6 – सिसदेवरी का प्राचीन टीला (मंडप तथा सोपान संरचना उत्तर दिशा का दृश्य)

फलक -4
उत्खनन पश्चात्

चित्र 7 – सिसदेवरी का प्राचीन टीला दक्षिणी-पूर्वी भाग

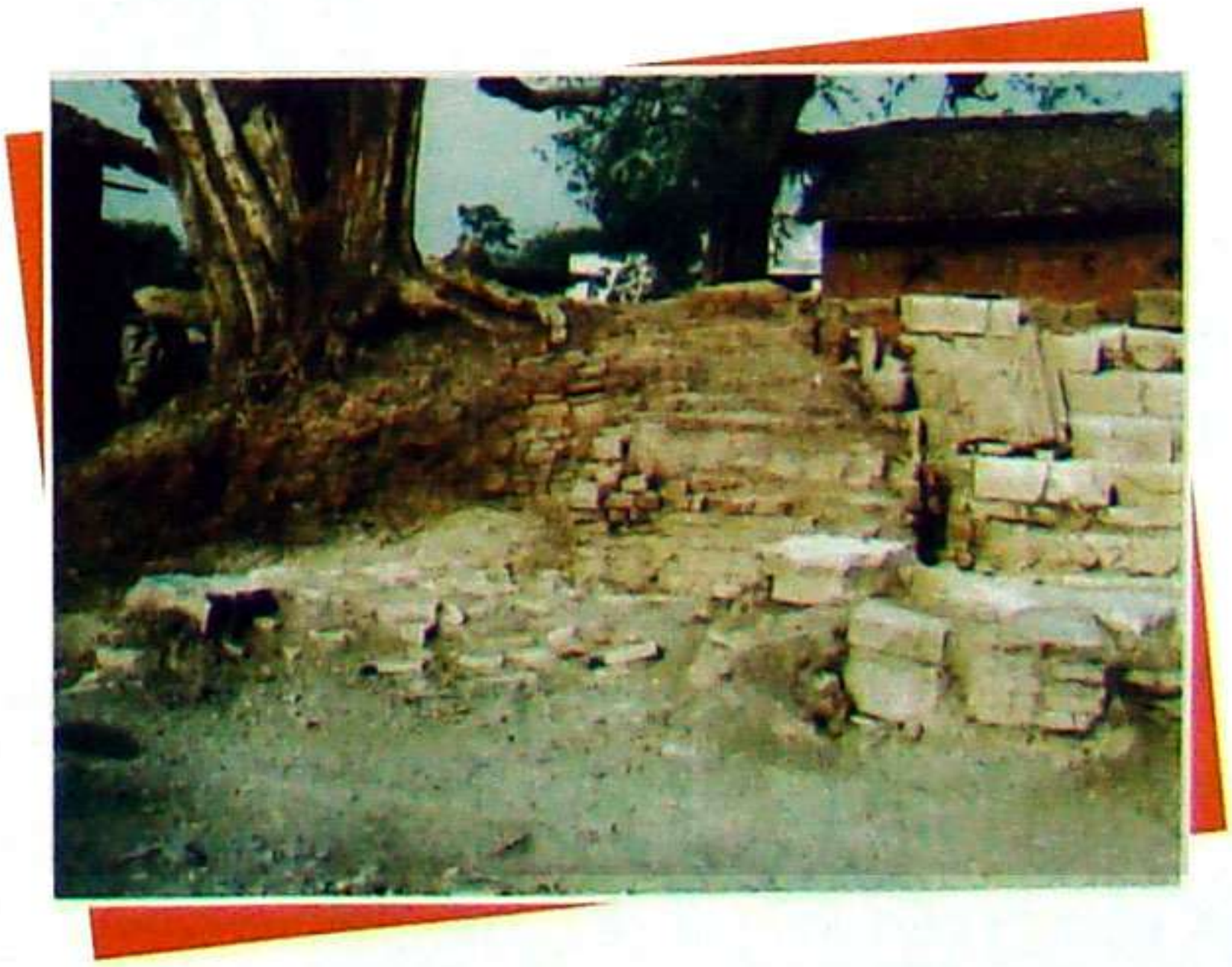

चित्र 8 – सिसदेवरी का प्राचीन टीला (ईंटों से निर्मित अधिष्ठान संरचना पश्चिमी उत्तर भाग)

फलक - 5
उत्खनन पश्चात्

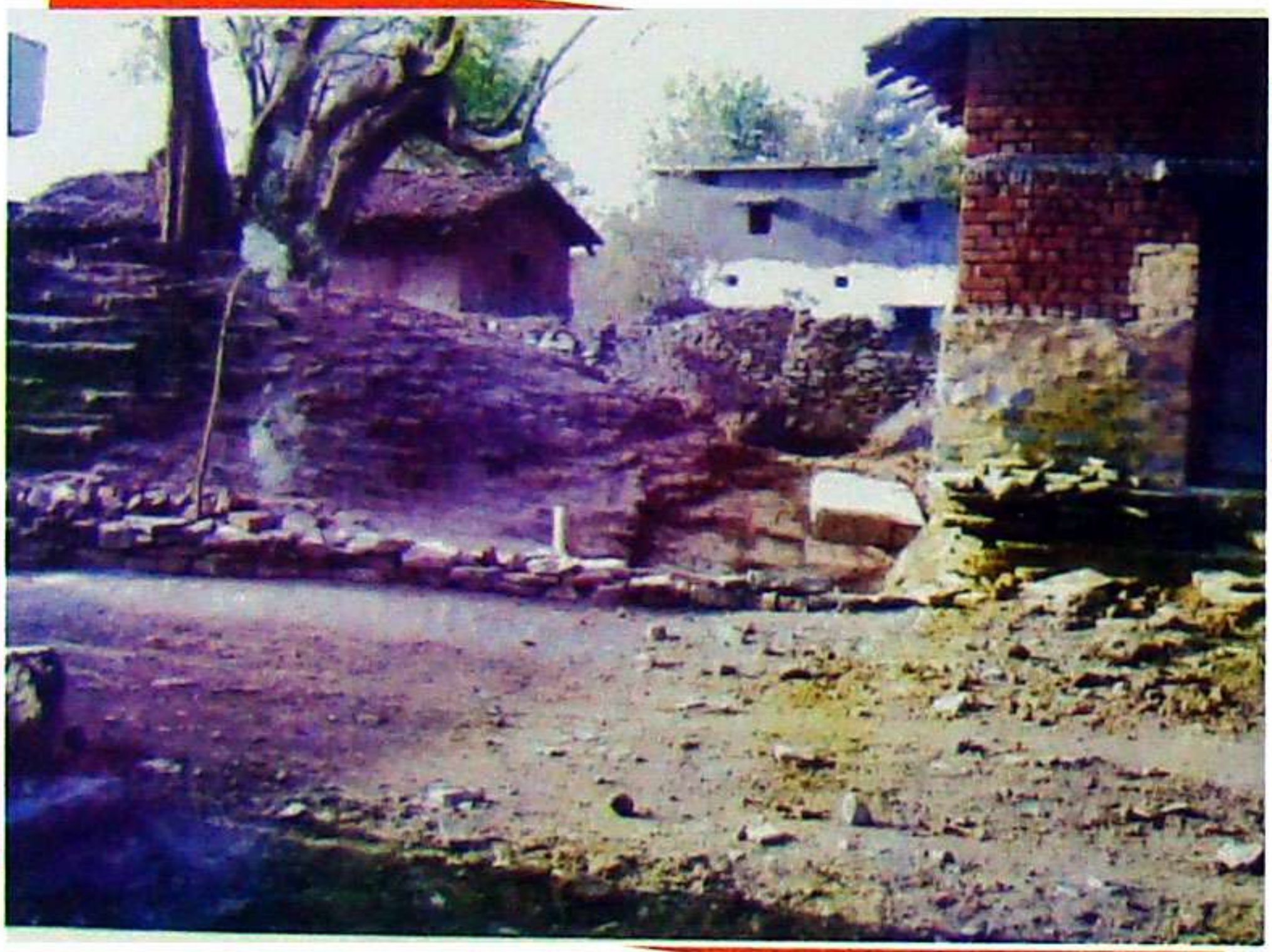

चित्र 9 – सिसदेवरी का प्राचीन टीला (ईंटों से निर्मित अधिष्ठान संरचना पूर्वी दक्षिणी भाग)

फलक - 6
उत्खनन पश्चात्

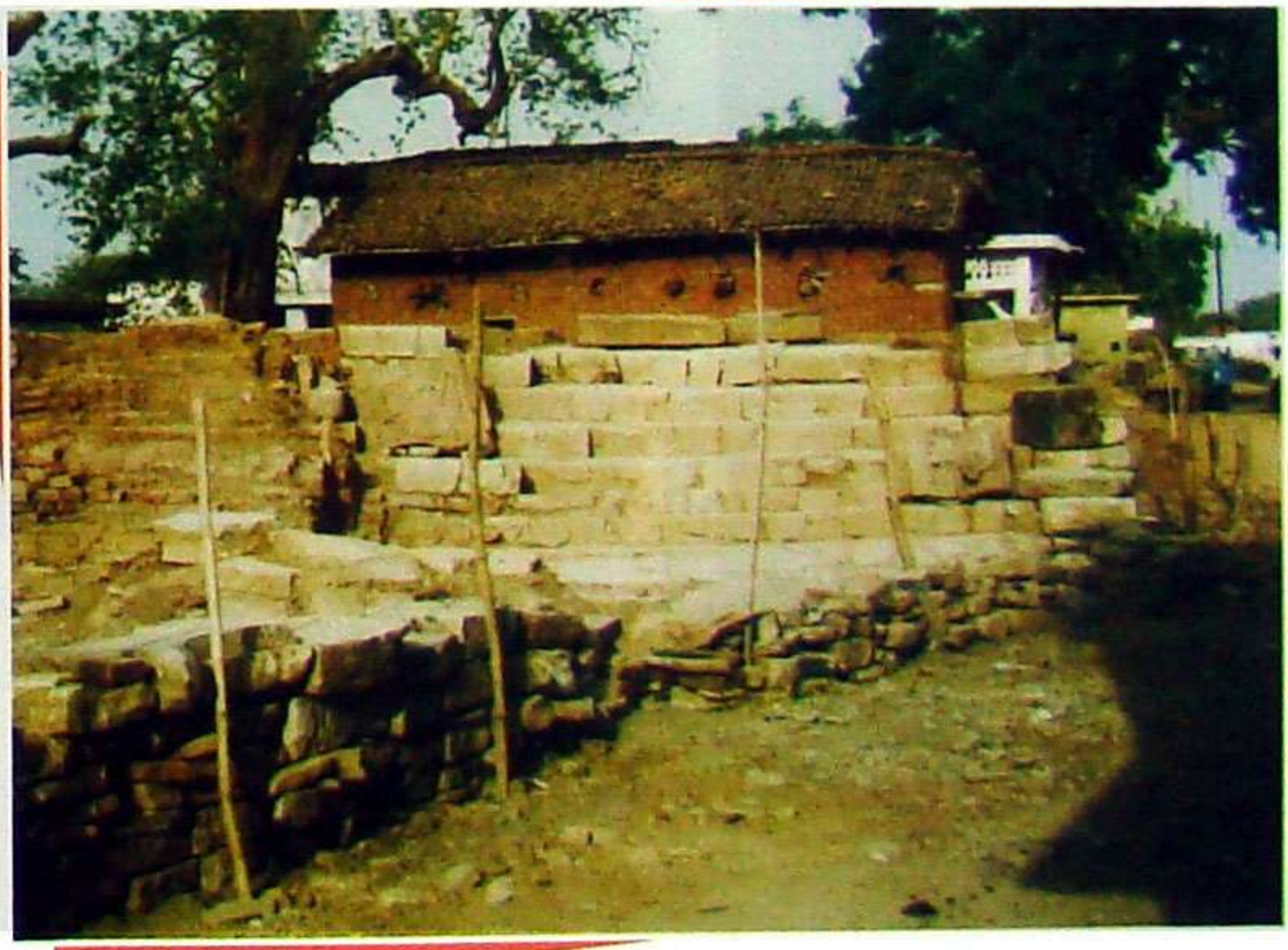

चित्र 10 – सिसदेवरी का प्राचीन टीला (सम्मुख दृश्य पश्चिमी भाग)

फलक - 2

चित्र 3 – अर्द्धनारीश्वर शीर्ष भाग

चित्र 4 – अर्द्धनारीश्वर मध्य भाग

फलक - 2

चित्र 3 – अर्द्धनारीश्वर शीर्ष भाग

चित्र 4 – अर्द्धनारीश्वर मध्य भाग

चित्र 5 – द्वार शाखा का भाग

चित्र 6 – पुरुष प्रतिमा (द्वारपाल) का आयोजन

फलक - 4

चित्र 7 – पुरूष प्रतिमा शीर्ष भाग

चित्र 8 – नारी प्रतिमा का हाथ

फलक - 5

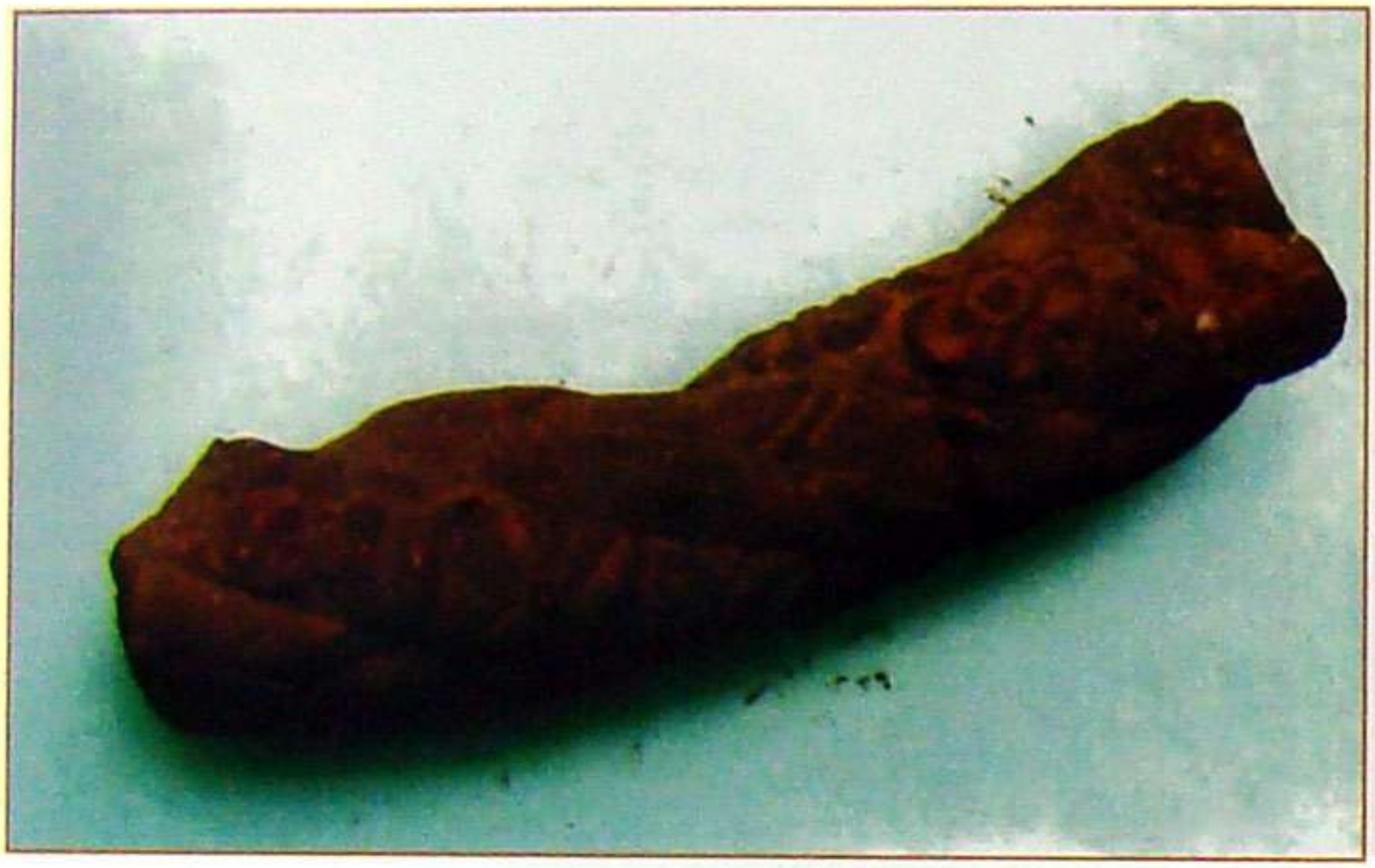

चित्र 9 – खंडित हारावली

चित्र 10 – खंडित हाथ

फलक - 6

चित्र 11 – मोदक पात्र पकड़े खंडित हाथ

चित्र 12 – पुष्पीय अलंकरण

चित्र 13 – पुष्पीय अलंकरण

चित्र 14 – जटिलता सूक्ष्म अलंकरण युक्त स्थापत्य खण्ड

चित्र 15 – जटिलतम सूक्ष्म अलंकरण युक्त स्थापत्य खण्ड

चित्र 16 – बाण फलक

फलक - 9

चित्र 17 – खंडित प्रस्तर चौकी

चित्र 18 – खंडित भुजा

फलक - 10

चित्र 19 – पुरूष प्रतिमा शीर्ष

चित्र 20 – भारवाहक गण

फलक - 12

चित्र 21 – पूजित प्राचीन शिव लिंग

फलक - 11

चित्र 22 – महारानी विक्टोरिया का सिक्का अग्रभाग

चित्र 23 – महारानी विक्टोरिया का सिक्का पृष्ठभाग

लेखक परिचय

जी. एल. रायकवार
जन्मतिथिः– 02.06.1945
जगदलपुर, जिला–बस्तर
शिक्षाः–1.एम.ए.,प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व
2. एम.ए.,इतिहास,पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर ,छत्तीसगढ़

वर्ष 1975 में मध्यप्रदेश शासन पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग में राजपत्रित अधिकारी के पद पर नियुक्त होकर सागर, बिलासपुर तथा रायपुर संभाग में कार्यरत रहे। छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के पश्चात संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग में कार्यरत रहकर उपसंचालक के पद से वर्ष 2005 में सेवा निवृत्त हुए।

अपने कार्यकाल में मल्हार, ताला,डीपाडीह,कलचा,भदवाही, बेलसर,महेशपुर आदि स्थलों में उत्खनन तथा अनुरक्षण कार्य में संलग्न रहे। राष्ट्रीय पाडुंलिपि मिशन सर्वेक्षण कार्य में राज्य संयोजक के रूप में कार्यरत रहे। पुरातत्व एवं इतिहास के अतिरिक्त क्षेत्रीय लोकभाषा तथा संस्कृति के सम्यक अध्ययन में प्रारंभ से संलग्न हैं।

रहली का सूर्य मंदिर (सागर), रानीदुर्गावती संग्रहालय जबलपुर की मार्ग प्रदर्शिका प्रकाशित पुस्तक है। पुरातन, कलावैभव, ज्ञानप्रवाह एवं अन्य पत्रिकाओं में शोध लेख प्रकाशित हैं। उत्कीर्ण लेख के संशोधित संस्करण के प्रकाशन में विशिष्ट योगदान रहा है। अभी भी पुरातत्व एवं संस्कृति के क्षेत्र में सतत कार्यशील हैं।

भारवाहक गण, सिसदेवरी, जिला–बलौदाबाजार